पंजीयन संख्या-69904/98
डाक पंजीयन संख्या-एसएसपी/एल०डब्ल्यू०/एन०पी०/318/2014-16

ओ३म्

श्रृण्वन्तुविश्वे अमृतस्य पुत्रा

आर्य्य लोक वार्ता

लखनऊ से प्रकाशित वैदिक विचारधारा का हिन्दी मासिक

वर्ष-१८, अंक:-५-६, नवम्बर-दिसम्बर (संयुक्तांक) सन्-२०१५, सं०-२०७२ वि०, दयानंदाब्द १९१, सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,११६; मूल्य:एक प्रति ५.००रु., वार्षिक सहयोग १००.०० रुपये

आर्य जीवन

आर्यों के भोजन में है सात्विक आहार का ही स्थान

फल-फूल, कंद, दूध, घृत आदि के सेवन से मिलता है समर्थ-सार्थक तन-मन

-पं.रघुनन्दन शर्मा-

आर्यों ने अर्थ के प्रधान अंग भोजन अर्थात् आहार की बड़ी ही छानबीन की है। उन्होंने आर्य-आहार को धार्मिक और वैज्ञानिक सिद्धान्तों के अनुसार स्थिर किया है। उनका विश्वास था कि 'आहारशुद्धौ सत्त्वशुद्धिः सत्त्वशुद्धौ ध्रुवा स्मृतिः' अर्थात् आहार की शुद्धि से सत्त्व की शुद्धि होती है और सत्त्व की शुद्धि से स्मरणशक्ति निश्चल होती है, परन्तु अशुद्ध आहार की शुद्धि से सत्त्व और स्मृति भी अशुद्ध हो जाती है। यहाँ तक कि अन्नदोष से आयु भी कम हो जाती है। मनु भगवान् स्पष्ट कहते हैं कि 'आलस्यादन्नदोषच्च मृत्यु र्विप्राञ्जिघांसति' अर्थात् आलस्य और अन्नदोष से मनुष्य शीघ्र मर जाता है। इसलिए जो आहार आयु, बल, रूप, कान्ति और मेधा की वृद्धि करनेवाला हो, वही आर्यों का भोजन हो सकता है। इतना ही नहीं प्रत्युत जिस भोजन के संग्रह करने में अर्थ के पांचों नियमों की अनुकूलता होती हो, किसी भी प्राणी की आयु और भोगों में विघ्न न पड़ता हो और आयु, बल, रूप और मेधा के साथ साथ मोक्ष प्राप्त करने से भी सहायता मिलती हो, वही आहार आर्यों का भोजन हो सकता है। अर्थात् आर्य भोजन चार कसौटियों पर कसा होना चाहिए। पहिली कसौटी यह है कि जिस आहार से आयु, बल, कान्ति और बुद्धि की वृद्धि होती हो। दूसरी कसौटी यह है कि जिस के प्राप्त करने में किसी को कष्ट न हो अर्थात् किसी प्राणी की आयु और भोगों में विघ्न उत्पन्न न हो। तीसरी कसौटी यह है कि जो आहार बिना किसी कष्ट के केवल अपने ही अगर्हित कर्मों से उत्पन्न हुआ हो और चौथी कसौटी यह है कि जो आहार मोक्ष को प्राप्त करने में सहायक हो, वही आर्यों का भोजन हो सकता है, अन्य नहीं। ऐसे आहार को आर्यों की परिभाषा में सात्त्विक आहार कहते हैं। सात्त्विक आहार का स्वरूप और प्रभाव वर्णन करते हुए भगवद्गीता में कृष्ण भगवान् कहते हैं कि-

आयुःसत्वबलारोग्यसुखप्रीतिविवर्धनाः। रस्या स्निग्धाः स्थिरा हृद्या आहाराः सात्विकप्रियाः।। विवित्तसेवी लघ्वाशी यतवाक्यकायमानसः।

अर्थात् आयु, सत्त्व, बल, आरोग्य, सुख और सौन्दर्य के बढ़ाने वाले रसीले, चिकने, पुष्ट और रुचिकर आहार ही सात्त्विक पुरुषों को प्रिय हैं। इसलिए मोक्षार्थियों को सदैव एकान्त-सेवी, हल्की खुराक के खानेवाले और शरीर, वाणी और मन को वश में करनेवाले होना चाहिए। इस सात्त्विक और हलकी खुराक का खुलासा करते हुए वेद भगवान् कहते हैं कि-

ऊर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम्। स्वधा स्थ तर्पयत मे पितृन।

अर्थात् घी, दूध, अन्नरस(मिश्री), पके हुए परिस्रुति(टपके हुए) फल और जल आदि बलकारक पदार्थों को खा पीकर हे स्वाध्याय पितरो! आप तृप्त हों। इस मन्त्र में उस आहार का स्वरूप स्पष्ट कर दिया गया है जिसको गीता ने सात्त्विक आहार कहा है और जिसको पितृपूजन के बाद आर्यों को नित्य खाना चाहिये। गीता ने सात्त्विक आहार का लक्षण रसीला, चिकना, पुष्ट और रुचिकर किया है और वेदमंत्र ने उसी को घी, दूध, मिश्री, जल और फल बतलाया है। दोनों का एक ही तात्पर्य है। घी, दूध, मिश्री, जल और फल ही रसीले, चिकने, पुष्ट और रुचिकर होते हैं। इसलिए घी, दूध, मिश्री, जल और फल ही आर्यों का आहार है। यही आहार उपर्यूक्त चारों परीक्षाओं से परीक्षित भी है। इन्हीं पदार्थों के खाने पीने से आयु, बल, मेधा और सत्त्व की वृद्धि होती है, इन्हीं पदार्थों के खाने से न किसी को कष्ट होता है और न किसी प्राणी की आयु और भोगों में बाधा पड़ती है। ये ही पदार्थ बिना किसी प्रकार का कष्ट उठाए केवल फलों की वाटिका लगाने और गौवों की सेवा करने से ही प्राप्त हो जाते हैं और हलकी खुराक होने से यही पदार्थ ब्रह्मचर्य और योगाभ्यास में भी सहायक होते हैं और मोक्षसाधन के योग्य बनाते हैं। इसीलिए आर्य शास्त्रों में इष्टापूर्त के द्वारा बाग बगीचों से फलों की और गोरक्षा के द्वारा घी, दूध की प्राप्ति करना उत्तम कहा गया है। आर्यों का सात्त्विक आहार तो फल और दूध ही है, जो अर्थ और आहार संग्रह के समस्त नियमों के अनुसार है और मोक्ष का सहायक है। इसीलिए शतपथ ब्राह्मण २/५/१६ में लिखा है कि 'एतद्वै पय एव अन्नं मनुष्याणाम्' अर्थात् यह दूध ही मनुष्य का अन्न है आहार है। इसी तरह ऋग्वेद १०/१४६/५ में लिखा है कि 'स्वादोः फलस्य जग्ध्वाय' अर्थात् मोक्षमार्गी को सुस्वादु फलों का आहार ही करना चाहिये। यह बात आर्यों की आदिम सभ्यता के इतिहास से भी अच्छी तरह पुष्ट होती है। क्योंकि आदिम काल में तपस्वियों का आहार प्रायः फल फूल ही था, अन्न नहीं। वनस्थों के आहार का वर्णन करते हुए मनु लिखते हैं-

पुष्पमूलफलैर्वापि केवलैर्वर्तयेत्सदा। कालपक्वैःस्वयं शीर्णैर्वैखानसमते स्थितिः।। (मनु.६/२१)

अर्थात् पुष्प, मूल अथवा काल पाकर पके और स्वयं टपके हुए फलों से वानप्रस्थी निर्वाह करें। वाल्मीकि रामायण में लिखा है कि रामचन्द्र, भरत, लक्ष्मण और सीता फलाहार करके ही तपस्वी जीवन निर्वाह करते थे। गुहराज के आतिथ्य करने पर रामचन्द्र कहते हैं-'कुशचीराजिनधरं फलमूलाशनं च माम्। विधिप्रणिहितं धर्मे तापसं वनगोचरम।।' (वा.रा., अयो.५०/४४)

अर्थात् मैं कुशचीर पहने हुए, तापस भेष और मुनियों के धर्म में स्थित केवल फल फूल ही खाकर रहता हूँ। भरत ने भी कहा है कि-'चतुर्दश हि वर्षाणि जटाचीरधरोम्यहम्। फलमूलाशनो वीर भवेयं रघुनन्दन।।' (वा.रा., अयो.५०)

अर्थात् मैं भी चौदह वर्ष तक जटा धारण करके और फल मूल ही खाकर रहूँगा। लक्ष्मण भी कहते हैं कि-'आहारिष्यामि ते नित्यं फूलानि च फलानि च। वन्यानि च तथान्यानि स्वाहार्हाणि तपस्विनाम्।। (वही, ३१/२६)

अर्थात् आपके लिए तपस्वियों के से वन्य पदार्थ लाकर दूँगा और मैं भी फल फूल ही खाकर रहूँगा। इसी तरह अयोध्याकाण्ड २७/१६ के अनुसार सीता जी भी कहती हैं कि 'फलमूलाशना नित्या भविष्यामि न संशयः' अर्थात् मैं सदैव फल फूल ही खाकर रहूँगी, इसमें सन्देह नहीं। इन प्रमाणों से ज्ञात होता है कि चौदह वर्ष तक फल फूल खाकर वृद्ध नहीं किन्तु जवान आदमी भी रह सकते थे और बड़े बड़े योद्धाओं के साथ युद्ध करके विजय प्राप्त करते थे।

इस वर्णन से ज्ञात होता है कि जब एक प्रकार के फल से इतना लाभ है, तो नाना प्रकार के फलाहार से बहुत बड़ा लाभ संभव है। अतएव स्पष्ट है कि मनुष्य फलों के द्वारा अच्छी प्रकार निर्वाह कर सकता है और फलाहार से दीर्घायु दीर्घकाय और बलवान् भी हो सकता है। लोग समझते हैं कि फलाहार से मेहनत करने की ताकत नहीं रह जाती, वे भी गलती पर हैं। सन्१९०२ में जरमन के विटनसटाइड नामक स्थान में अन्तरजातीय पैदल दौड़ हुई थी। यह दौड़ ड्रस्डन से बर्लिन तक १२४मील लम्बी थी। दौड़ने वाले सब ३२ आदमी थे। मौसम गर्मी (अर्थात् १८मई, १९०२) का था। दौड़ने वाले ड्रस्डन से ७.३०बजे निकले। इनमें कुछ फलाहारी, कुछ शाकाहारी और कुछ मांसाहारी थे। शाकाहारियों में बर्लिन का प्रसिद्ध चलने वाला कार्लमान भी था। बर्लिन में जो सबसे पहले पहुँचने वाले ६ मनुष्य थे, वे तो शाकान्न और फलाहारी ही थे। इनमें कार्लमान प्रथम था।। कार्लमान ने २६ घंटे और ५८ मिनट में यात्रा समाप्त की थी।

लेखक

दौड़ की समाप्ति पर वह बिलकुल तरोताजा था, किन्तु बड़े प्रसिद्ध मांसाहारी पहलवान थकावट से चकनाचूर हो कर पहुँचे थे। यह घटना बतलाती है कि मनुष्य मांसाहारी नहीं प्रत्युत फलाहारी ही है। क्योंकि मनुष्य के शरीर की बनावट, उसके दाँत और आँतों को देखकर डॉक्टरों ने निर्णय किया है कि मनुष्य की स्वाभाविक खुराक फल ही है। डॉक्टर लुई कुन्हे के हवाले से पूज्य पण्डित महावीर प्रसाद द्विवेदी कहते हैं कि मनुष्य का स्वाभाविक भोजन फल, फूल और कन्द आदि ही हैं। स्वाभाविक भोजन के छोड़ने ही से हमलोग विविध भाँति के रोगों से पीड़ित हो रहे हैं। अभ्यास से मनुष्यों ने अपनी इन्द्रियों की स्वाभाविक शक्ति को ऐसा

(शेष पृष्ठ ३ पर...)

विनय पीयूष

पूजेंगे, तुमको पूजेंगे !

उत ब्रुवन्तु नो निदो,
निरन्यतश् चिदारत।
दधाना इन्द्र इद् दुवः।। (ऋग्वेद 1/4/5)

पूजेंगे, तुमको पूजेंगे !

निन्दक कहें,
यहाँ से जाओ;
भागो, अरे,
यहाँ से जाओ

तो भी एक तुम्हें चाहेंगे,
तुम्हें भजेंगे, तुम्हें जपेंगे।

काव्यानुवाद : अमृत खरे

सम्पादकीय

बरसात नई होने दे

'दुरित' अर्थात् दुर्गुणों को दूर करना और 'भद्र' अर्थात् सद्गुणों को स्थापित करना- मानवता का पवित्र अनुष्ठान है और साहित्य मानवता का आख्यान है। भारत का इतिहास मानवता के इसी मंगलमय मार्ग पर चलता आया है। 'मंगल भवन, अमंगल हारी' की घोषणा करने वाले गोस्वामी तुलसी दास ने श्री राम के जन्म का कारण स्पष्ट करते हुए कहा है-

असुर मारि थापहिं सुरन्ह,
राखहिं निज श्रुति सेतु;
जग विस्तारहि विमल यश,
राम जन्म कर हेतु।

इसी मार्ग का अनुसरण करते हुए द्वापर में भगवान् श्रीकृष्ण दृष्टिगत होते हैं। 'परित्राणाय साधूनां, विनाशाय च दुष्कृतां'- भारतीय संस्कृति का डिंडिम घोष नहीं तो और क्या है!

घटनाएँ घटित होती रहती हैं किन्तु कोई घटना सिद्धान्त नहीं बनती। काल रूपी अश्व की टापें कभी भी रुकती नहीं। अनवरत चलती रहती है। ऐसी दशा में 'दुरित' के बाद जो भी 'भद्र' है उसे अपनाना चाहिए। देश विभाजन की त्रासदी झेलने के बाद देशवासी वहीं रुके नहीं; वरन् १५ अगस्त १९४७ को स्वतंत्रता दिवस के उत्सवों में खो गये। जो शिव है- कल्याणकर है, उसका स्वागत करना और जो अशिव है- अकल्याणकर है, उसका परित्याग करना- युग युग से यही साहित्यकारों का ध्येय रहा है किन्तु साहित्यकार के कानों में जब सियासत, साम्प्रदायिकता और संकीर्णता का मंत्र फूँक दिया जाता है, तो वह साहित्यकार न होकर मात्र एक अवसरवादी रह जाता है। सम्प्रदायवाद की आँधी में बड़े बड़े दरख्त झुकते, टूटते देखे गये हैं- आज के शायरों और साहित्यकारों की उनके सामने औकात ही क्या है? आधुनिक साहित्यकारों के बारे में; जिन्होंने अपने अकादमी सम्मान वापस कर दिये हैं; कविवर श्री गोपालदास 'नीरज' का यह कथन सोलहो आने सही है-

न पीने का सलीका, न पिलाने का शऊर-
जाने कैसे लोग आ गये हैं, इस मयखाने में।

गोहत्या और उसके बदले में मानवहत्या- दोनों ही नृशंस कार्य हैं, दुर्गुण हैं और दुरित हैं; फिर भी साहित्यकार इन्हीं से चिपका नहीं रह सकता वरन् ऐसी परिस्थियों के नये सृजन हेतु तत्पर होता है; जिससे इस तरह की दुर्घटनाओं की नौबत ही न आये। यदि अधम परिवेश में भी कहीं शिवत्व के दर्शन होते हैं; उनका बढ़कर स्वागत ही नहीं करता है; उसमें अपना योगदान भी प्रस्तुत करता है। दादरी में ही जहाँ का वातावरण नृशंस काण्डों ने विषाक्त बना दिया था- नये निर्माण की दृष्टि से हिन्दू परिवारों ने मिलजुल कर अपने खर्चे और अपनी व्यवस्था के बलबूते पर एक मुस्लिम परिवार की लड़की की शादी सम्पन्न करायी। यह क्या कोई साधारण बात थी, सम्मान प्राप्त साहित्यकारों को आगे बढ़कर इस नवविवाहित जोड़ी को क्या आशीर्वाद नहीं देना चाहिए था? ऐसी परिस्थितियों के स्वागत में साहित्यकारों की वाणी मुखर हुई होती तो सुंदर वातावरण और भी सुंदर हो जाता!

शिवत्व के स्वागत का इसी के बाद दूसरा अवसर उस वक्त उपस्थित हुआ- जब विजयादशमी और मोहर्रम दो विलोमार्थक त्यौहार एक ही काल खण्ड में उपस्थित हुए और हिन्दू मुसलमान दोनों ने उल्लास और मातम साथ ही साथ मनाकर सौहार्द का एक बेशकीमती नमूना पेश किया। कहाँ तो विजयादशमी में भगवान् श्रीराम की अधर्म पर विजय का उल्लास और कहाँ दूरवर्ती देश में सैकड़ों वर्ष पहले घटित लोमहर्षक दुःखदायी प्रसंग। हिन्दुओं ने ताजियादारी में सहयोग किया और मुसलमानों ने रामलीला में। कई जगह जिन कारीगरों ने शानदार ताजिये बनाये; उन्हीं कारीगरों ने रावण, मेघनाद और कुंभकर्ण के विशालकाय पुतले भी खड़े किये। रामलीला में कई जगह मुस्लिम समाज के कलाकारों ने अभिनय किया तो हिन्दुओं ने कई जगह ताजियादारी की और मन्नतें मांगी। मैथिलीशरण गुप्त जैसे सच्चे साहित्यसाधक वर्षों पहले 'सिद्धराज' खण्डकाव्य के माध्यम से आज भी हिन्दू मुसलमान दोनों को यह संदेश देते हुए मिलते हैं-

जाओ, भय छोड़ तुम अपनी अजान दो,
और गा बजाकर उतारें हम आरती!

उपर्युक्त दो अवसरों पर चूकने वाले अकादमी सम्मानों से नवाजे गये साहित्यकारों को तीसरा अवसर २६ अक्टूबर २०१५ दिन सोमवार को सुलभ हुआ; जब १४ वर्ष पूर्व भूल से पाकिस्तान पहुंची भारतीय हिन्दू लड़की 'गीता' अपनी मातृभूमि भारत वापस आई। इस सुखद प्रसंग के पीछे पाकिस्तानी सरकार की सद्भावनाएं परिलक्षित हो रही हैं; वहाँ नरेन्द्र मोदी सरकार की सक्रियता भी कम प्रशंसनीय नहीं है, विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज की योग्यता और कार्यप्रणाली की जितनी प्रशंसा की जाय, कम है।

मैं उन तमाम साहित्यकारों का आवाहन करता हूँ जिन्होंने एक कांड को लेकर अपने तमगे और सम्मान वापस करके शासन और साहित्य दोनों को ही हतोत्साहित किया है, वे आगे बढ़कर १४ वर्षों बाद पाकिस्तान से भारतीय बालिका गीता की सकुशल वापसी का स्वागत करें- अपने सम्मान वापसी का निर्णय वापस लें और देश को सद्भावना और शान्ति के मार्ग पर आगे बढ़ने में सहायक हों। मोहर्रम के आँसू और विजयादशमी के उल्लास भरे पल एक नई आशा विश्वासमयी सृष्टि कर रहे हैं, उसका स्वागत करें-

वह हँसी और यह आँसू,
घुलने दे मिल जाने दे;
बरसात नयी होने दे,
कलियों को खिल जाने दे।।

(जयशंकर 'प्रसाद')

सत्यार्थ प्रकाश वार्ता-१६२

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमरग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' के धारावाहिक स्वाध्याय के क्रम में सप्तम समुल्लास का अंश

वेद-विषय

(प्रश्न) वेद ईश्वरकृत हैं अन्यकृत नहीं। इसमें क्या प्रमाण?

(उत्तर) जैसा ईश्वर पवित्र, सर्वविद्यावित् शुद्धगुणकर्मस्वभाव, न्यायकारी, दयालु आदि गुण वाला है वैसे जिस पुस्तक में ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव के अनुकूल कथन हो वह ईश्वरकृत; अन्य नहीं। और जिसमें सृष्टिक्रम प्रत्यक्षादि प्रमाण आप्तों के और पवित्रात्मा के व्यवहार से विरुद्ध कथन न हो वह ईश्वरोक्त। जैसा ईश्वर का निर्भ्रम ज्ञान वैसा जिस पुस्तक में भ्रान्तिरहित ज्ञान का प्रतिपादन हो; वह ईश्वरोक्त। जैसा परमेश्वर है और जैसा सृष्टिक्रम रक्खा है वैसा ही ईश्वर, सृष्टि, कार्य, कारण और जीव का प्रतिपादन जिसमें होवे वह परमेश्वरोक्त पुस्तक होता है और जो प्रत्यक्षादि प्रमाण विषयों से अविरुद्ध शुद्धात्मा के स्वभाव से विरुद्ध न हो; इस प्रकार के वेद हैं। अन्य बाइबल, कुरान आदि पुस्तकें नहीं। इसकी स्पष्ट व्याख्या बाइबल और कुरान के प्रकरण में तेरहवें और चौदहवें समुल्लास में की जायगी।

(प्रश्न) वेद की ईश्वर से होने की आवश्यकता कुछ भी नहीं। क्योंकि मनुष्य लोग क्रमशः ज्ञान बढ़ाते जाकर पश्चात् पुस्तक भी बना लेंगे।

(उत्तर) कभी नहीं बना सकते। क्योंकि बिना कारण के कार्योत्पत्ति का होना

असम्भव है। जैसे जंगली मनुष्य सृष्टि को देख कर भी विद्वान् नहीं होते और जब उनको कोई शिक्षक मिल जाय तो विद्वान् हो जाते हैं और अब भी किसी से पढ़े बिना कोई भी विद्वान् नहीं होता। इस प्रकार जो परमात्मा उन आदिसृष्टि के ऋषियों को वेदविद्या न पढ़ाता और वे अन्य को न पढ़ाते तो सब लोग अविद्वान् ही रह जाते। जैसे किसी किसी बालक को जन्म से एकान्त देश, अविद्वानों वा पशुओं के संग में रख देवे तो वह जैसा संग है वैसा ही हो जायगा। इसका दृष्टान्त जंगली भील आदि हैं। जब तक आर्यावर्त्त देश से शिक्षा नहीं गई थी तब तक मिश्र, यूनान और यूरोप देश आदिस्थ मनुष्यों में कुछ भी विद्या नहीं हुई थी और इंग्लैण्ड के कुलुम्बस आदि पुरुष अमेरिका में जबतक नहीं गये थे तब तक वे भी सहस्रों, लाखों, क्रोड़ों वर्षों से मूर्ख अर्थात् विद्याहीन थे। पुनः सुशिक्षा के पाने से विद्वान् हो गये हैं। वैसे ही परमात्मा से सृष्टि की आदि में विद्या शिक्षा की प्राप्ति से उत्तरोत्तर काल में विद्वान् हो आये।

स पूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात्।
।। योग सू.।।

जैसे वर्त्तमान समय में हम लोग अध्यापकों से पढ़ के ही विद्वान् होते हैं वैसे परमेश्वर सृष्टि के आरम्भ में उत्पन्न हुए अग्नि आदि ऋषियों का गुरु अर्थात् पढ़ानेहारा है। क्योंकि जैसे जीव सुषुप्ति और प्रलय में ज्ञानरहित हो जाते हैं वैसा परमेश्वर नहीं होता। उसका ज्ञान नित्य है। *(क्रमशः)*

वेद प्रवचन

प्रभु की शरण में ही कल्याण होगा

❑पं.शिव कुमार शास्त्री, भू.पू.संसद सदस्य

पवस्व वाजसातमोऽभि विश्वानि वार्या।
त्वं समुद्रः प्रथमे विधर्मं देवेभ्यः सोम मत्सरः।।
(सामo : 521)

शब्दार्थ-

(**सोम**) हे अमृत परमात्मन्! (**वाजसातमः**) अन्नादि पदार्थों के अतिशयदाता (**मत्सरः**) आनन्दस्वरूप और आनन्ददायक (**त्वम्**) आप (**विश्वानि**) सब (**वार्या**) वरण स्तोत्रों को (**अभि**) लक्ष्य करके (**प्रथमे**) विशाल वा श्रेष्ठ (**विधर्मन्**) विशेष करके धारक (**समुद्रः**) हृदयान्तरिक्ष में (**देवेभ्यः**) अपने उपासकों के लिए (**पवस्व**) अपनी प्राप्ति का विधान कीजिये।

व्याख्या-

मंत्र में मुख्य रूप से तीन बातें कही गई हैं-पहली यह है कि अन्नादि पदार्थों का दाता वह प्रभु ही है, दूसरी यह कि उसी आनन्दस्वरूप से आनन्द का प्रसाद मिल सकता है, तीसरी यह है कि जिस भक्त को प्रभु वरणीय समझता है, उसे उसके हृदयान्तरिक्ष में दर्शन देता है। अब एक-एक बात पर विस्तार से विचार कीजिये। जाति, आयु और भोग का निश्चय कर्मानुसार होता हे। '**सति मूले तद् विपाको जात्यायुर्भोगाः**'-यह योगशास्त्र का मत है। कर्म का फल प्रभु की व्यवस्था से मिलता है-

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परि षस्वजाते। तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्यनश्नन्नन्यो अभि चाकशीति।। *-ऋ. १/१६४/२०*

'दो, जीव और ईश्वर, चेतनता और पालनादि गुणों में समान हैं, व्याप्य-व्यापक भाव से सदा संयुक्त और परस्पर मित्र हैं। ये दोनों प्रकृतिरूपी वृक्ष पर बैठे हुए हैं। इनमें से एक (जीव) उस वृक्ष के स्वादु फलों (भोगों) को खाता है और दूसरा न खाता हुआ फल की व्यवस्था करता है।' तो इस प्रकार अन्नादि पदार्थों का दाता वह भगवान् ही है।

वेद और शास्त्र मनुष्य को निष्काम कर्म का आदेश दे रहे हैं-**कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः** (यजु. ४०/२)-मनुष्य कर्म करता हुआ ही १०० वर्ष तक जीने की इच्छा करे। किन्तु फल की आसक्ति से बचना चाहिए, क्योंकि यह मानवा- धिकार की सीमा से बाहर की चीज़ है। गीता में इस बात को थोड़ा विशद रूप में कहा गया है-'**कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन**'-तेरा अधिकार कर्म करने तक है, फलों में कदापि नहीं। फल कैसा हो, कितना हो, कब हो, इसमें अपनी टाँग नहीं अड़ानी चाहिए, यह हमारा काम नहीं है। एक अन्य स्थान पर इस बात को और भी स्पष्ट किया है-'**मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि**'-तू न तो कर्मफल में आसक्त हो और न निठल्ला बैठ! इसीलिए मंत्र में पहली बात कही गई कि समस्त अन्नादि भोग्य पदार्थों का दाता वही है, तू पुरुषार्थ करने के बाद उसी से माँग! उससे माँगने का तुझे अधिकार है। वह ऐसा दाता है जिससे प्रत्येक माँगता है-चाहे राजा हो या रंक।

मंत्र की दूसरी बात है कि उस आनन्द स्वरूप प्रभु से ही हमें आनन्द की प्राप्ति हो सकती है। प्रकृति सत्, जीवात्मा सत् और चित् है, अर्थात् नित्यत्व के साथ-साथ चेतन है और इसीलिए कर्म करने में समर्थ है। प्रभु सत् है, चित् है और आनन्दस्वरूप भी है। जीव को सदा आनन्द प्राप्त करने की इच्छा रहती है। वह जिस ओर और जो भी यत्न करता है, आनन्द के लिए ही करता है। यह आनन्द की ललक ही उसे विषयों की ओर घसीट ले जाती है। विषयों में उसे उसका आभास मिलता है, किन्तु भोग की समाप्ति पर प्रतिक्रिया क्लेश उत्पन्न करती है। वह फिर विषयोपभोग के समय के आनन्द को प्राप्त करना चाहता है और यह भी हार्दिक इच्छा होती है कि यह क्रम टूटने न पावे। परिणाम यह निकलता है कि वह विषयों के भँवर में चक्र काटता है और अन्त में निराशा ही हाथ लगती है, क्योंकि उसने आनन्द वहाँ खोजा, जहाँ था नहीं। अच्छा लिखा है एक नीतिकार ने- **जन्मेदं व्यर्थतां नीतं भवभोगोपलिप्सया। काचमूल्येन विक्रीतो हन्त चिन्तामणिर्मया।।**

'संसार के भोगों को प्राप्त करने की इच्छा से मैंने ऐसी मूर्खता की है, जैसे शीशे के टुकड़ों के बदले में कोई चिन्तामणि दे डाले।' अतः वेद शिक्षा दे रहा है कि आनन्द की प्राप्ति तो उसे आनन्द-घन की उपासना से होगी। विषयों में आनन्द की झलक क्षणिक है और तभी तक उसकी झलक मिलती है, जब तक शरीर को उसी आवश्यकता है। आवश्यकता के निवृत्त होते ही वह वस्तु निरर्थक प्रतीत होती है, उसमें कोई आनन्द नहीं। किन्तु प्रभु का ज्ञानमय पावन सम्पर्क ऐसा है कि जिसका कोई पारावार नहीं, जिसे प्राप्त कर मानव तृप्त और शान्त हो जाता है। यही मानव-जीवन की यात्रा का लक्ष्य है। सारे जप-तप-साधन इस यात्रा की तैयारी के लिए हैं। अतः दूसरा उपदेश हुआ कि आनन्द का भण्डार वह प्रभु ही है।

मंत्र की तीसरी बात है कि उससे मिलने के लिए और कहीं भटकने की आवश्यकता नहीं, उसके दर्शन हृदयान्तरिक्ष में होते हैं। मेल वहाँ होता है, जहाँ मिलनेवाला और जिससे मिलना है, दोनों विद्यमान हों। ऐसा एकमात्र स्थान हृदय ही हो सकता है। प्रभु तो सर्वत्र व्यापक है ही, किन्तु उससे मिलनेवाला जीव तो अपने शरीर में भी व्यापक नहीं है। ऐसा स्थान तो केवल हृदय है, जहाँ जीवात्मा और परमात्मा दोनों हैं। मूर्त्ति भी दर्शन का माध्यम इसीलिए नहीं हो सकती, क्योंकि उसमें सर्वव्यापकता के कारण प्रभु तो है, किन्तु जीव नहीं है।

अतः अभ्यास और वैराग्य से मन के पवित्र होने पर निर्मल हृदय-मन्दिर में उसके दर्शन होते हैं। *('श्रुति सौरभ' से साभार)*

दयानन्द चरितम्

-आचार्य दीपंकर, मेरठ

छन्द-८५

अथोद्धारे मुख्यस्त्वमसि यदि नेतास्म्यघजुषां
प्रधानः साधूनामहमपि विमुख्यः खलगणे।
शिवानामाधारस्त्वमसि तदहं ध्वंसरुचिकः
अयं सम्बन्धो नो यतिवर! सुयोगेन घटितः।।

समाज का उद्धार करने वालों में
तुम अग्रगामी हो,
और मैं भी पापियों का
सरदार हूँ !
परोपकारियों में तुम
अग्रणी हो,
मैं खलसमुदाय का
मुखिया हूँ !!
कल्याणकार्यों के तुम
आधारभूत हो और
मैं विध्वंस कार्यों में सदा
आगे रहता हूँ !!!
हे संन्यासी !
मेरा और तुम्हारा यह सम्बन्ध
बड़े संयोग से बना है !
यह खण्डित नहीं हो सकता।

('दयानन्द चरितम्' से साभार, क्रमशः)

सत्संग
जिज्ञासा और समाधान

जिज्ञासा :

श्री पं.उम्मेद सिंह विशारद, भजनोपदेशक, वैदिक प्रचारक, गढ़निवास मोहकमपुर, देहरादून का एक लेख अक्टूबर 2015- शीर्षक 'भगवान् और ईश्वर शब्दों की परिभाषा'- अनेक आर्य पत्रों में एक साथ प्रकाशित हुआ है। 'वैदिक संसार' इन्दौर, 'नूतन निष्काम पत्रिका' मुंबई सहित कई पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित उक्त लेख के साथ ही 'आर्य उपदेशकों से निवेदन' उपशीर्षक से पं.उम्मेद सिंह विशारद ने लिखा है- "प्रायः जनसाधारण में प्रचलित ईश्वर के लिए भगवान शब्द का प्रयोग आर्य उपदेशक भी करते रहते हैं। जबकि सम्पूर्ण वेदों में और वेदानुकूल आर्षग्रन्थों में कहीं पर ईश्वर के लिए भगवान नही लिखा है। अतः हमें बड़ी सावधानी से उपदेश करते समय ईश्वर या परमात्मा शब्द का प्रयोग ईश्वर के लिए करना चाहिए और महापुरुषों के लिए भगवान शब्द का प्रयोग करना उचित है।" पं.उम्मेद सिंह विशारद का यह दावा कि सम्पूर्ण वेदों में कहीं भी ईश्वर के लिए भगवान नहीं लिखा है?-कहाँ तक उचित है? कृपया मेरी इस जिज्ञासा का समाधान करें।

-वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी', 150, नई बस्ती, सीतापुर, उ.प्र.

समाधान :

पं.उम्मेद सिंह विशारद जी तथा स्वाध्यायनिष्ठ पाठकों को हम सूचित करना चाहते हैं कि यह दावा कि सम्पूर्ण वेदों में कहीं भी ईश्वर के लिए भगवान नहीं लिखा है- सर्वथा खोखला है। कृपया यजुर्वेद अध्याय ३६, मंत्र २७- भाष्य महर्षि दयानन्द सरस्वती का अवलोकन करें-

नमस्तेऽस्तु विद्युते, नमस्ते स्तनयित्नवे।
नमस्ते भगवन्नस्तु, यतः स्वः समहीहसे।।

इस मंत्र का पदार्थ करते हुए महर्षि लिखते हैं- 'हे भगवन्- अनन्त ऐश्वर्य युक्त परमेश्वर!' वेद और महर्षि दयानन्द दोनों ने यहाँ ईश्वर को भगवान् कहा है।

दूसरा उदाहरण 'आर्य्याभिविनय' से उद्धृत है-

भग प्रणेतर्भग सत्यराधे भगेमां धियमुदवा ददन्नः।
भग प्र नो जनय गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम।।

(अ) व्याख्यान- हे भगवन्! परमैश्वर्यवान् भग ऐश्वर्य के दाता, संसार का परमार्थ आप ही हो.....।

(ब) हे सत्यराधः भगवन्! सत्यैश्वर्य की सिद्धि करने वाले आप ही हो...।

उपर्युक्त दोनों ही मंत्र वेद के हैं और भाष्य भी महर्षि दयानन्द का ही है। ये किसी प्रकार की खोज या अनुसंधान के बिना सहज उपलब्ध है। यदि पं.विशारद जी चाहेंगे तो शताधिक ऐसे उदाहरण वेद तथा महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों एवं अन्य ग्रन्थों से- प्रस्तुत किये जा सकते हैं, जहाँ ईश्वर को भगवान् कहा गया है।

बताते चलें कि पं.विशारद जी का यह लेख-'आर्य उपदेशकों से निवेदन' सहित 'आर्य लोक वार्ता' को भी प्राप्त हुआ था; और इससे पूर्व भी पं.विशारद जी के लेख 'आर्य लोक वार्ता' को मिलते रहे हैं किन्तु अपनी सीमाओं के कारण हम उन्हें प्रकाशित करने में असमर्थ रहे हैं।

यहाँ यह स्पष्ट कर देना भी जरूरी है कि आज भी आर्य समाज में पं.बिहारी लाल शास्त्री, ओम प्रकाश शास्त्री, रामानंद शास्त्री, रुद्रदत्त शास्त्री, वाचस्पति शास्त्री, प्रकाशवीर शास्त्री, सत्यमित्र शास्त्री और शिव कुमार शास्त्री की परम्परा के उपदेशक मौजूद हैं। उन्हें विशारद जी के उपदेश की आवश्यकता नहीं है, हाँ यदि उनसे स्वयं विशारद जी कुछ सीख सकें तो उनका सौभाग्य होगा।

-सम्पादक

(पृष्ठ 1 का शेष.....)

आर्यों के भोजन.....

बिगाड़ा है कि जिस वस्तु को देखकर हमें घृणा होनी चाहिये, उसे ही हम प्रसन्नतापूर्वक खाते हैं। इस विषय में पशु ही हमसे अच्छे हैं। जो पशु घास खाते हैं, वे मांस की तरफ देखते भी नहीं और जो मांस खाते हैं, वे घास की ओर दृष्टिपात भी नहीं करते। इसी प्रकार फल और कन्द आदि खाने वाले जीव भी उन पदार्थों को छोड़कर घास-पात, नहीं खाते और प्यास लगने पर भी सोडावाटर और मद्य नहीं पीते, परन्तु मनुष्य एक विलक्षण पशु है। वह घास-पात, फल फूल मांस मदिरा सभी उदरस्थ कर जाता है। फिर भला उसका शरीर क्यों न रोगों का घर बन जावे? भोजन के अनुसार स्थलचर पशुओं के तीन भेद हैं-मांसाभक्षी, वनस्पतिभक्षी और फलभक्षी। बिल्ली, कुत्ता और सिंह आदि जितने हिंस्र जन्तु हैं, वे सब मांसभक्षी हैं। उनका स्वाभाविक भोजन मांस ही है इसलिए उनके दाँत लम्बे, नुकीले और दूर दूर होते हैं। इस प्रकार के दाँतों से ये जीव मांस को फाड़कर निगल जाते हैं। उनके दाँतों की रचना से यह सूचित होता है कि ईश्वर ने इन्हें मांस खाने के ही लिए वैसे दांत दिये हैं। गाय, बैल, भैंस, बकरी आदि जीव वनस्पतिभक्षी हैं। इसलिए ईश्वर ने उनके दांत ऐसे बनाये हैं, जिससे वे उन दांतों से घास को सहज ही में काट सकें। उनके दांतों की रचना ही उनके वनस्पति भक्षी होने का प्रमाण है। किन्तु मनुष्य के दांत न तो मांसभक्षी पशुओं से मिलते हैं और घासभक्षी पशुओं से ही। उनकी बनावट ठीक वैसी ही है, जैसी बन्दर आदि फलभोगी जीवों की होती है। इसलिए यह बात निर्विवाद है, निर्भ्रान्त है और निःसंश है कि ईश्वर ने मनुष्यों के दांत फल खाने के लिए ही बनाए हैं। परन्तु हमलोग उनसे मांस और मच्छली काटने लगे हैं, आगरे की दालमोठ और लखनऊ की रेवड़ी तोड़ने लगे है, इस पर भी कोई नीरोग होने का दावा कर सकता है?

मांसभक्षी जीवों का मेदा छोटा और गोल होता है। उनके शरीर से उनकी अंतड़ियां ३ से लेकर ५ गुणा तक अधिक लम्बी होती हैं। वनस्पतिभक्षी पशुओं का मेदा बहुत बड़ा होता है। वे खाते भी अधिक हैं। उनकी अंतड़ियां उनके शरीर से २० से लेकर २८ गुणा तक अधिक लम्बी होती हैं। अब रहे फलभक्षी जीव। उनका मेदा मांसभक्षी जीवों के मेदे से अधिक चौड़ा होता है और उनकी अंतड़ियां १० से लेकर १२ गुना तक अधिक लम्बी होती हैं। अब इन तीनों प्रकार के जीवों में मनुष्य का मिलान कीजिए। सिर से लेकर रीढ़ की हड्डी के छोर तक मनुष्य की लम्बाई डेढ़ से ढाई फुट तक होती है और मनुष्य की अंतड़ियों की लम्बाई १६ से २८ फुट तक होती है। अर्थात् उनकी लम्बाई शरीर की लम्बाई से १० से १२ गुना तक अधिक हुई। यहां भी फलभक्षी पशुओं से मनुष्यों को समता मिली। शरीर के अनुसार मनुष्य की अंतड़ियां फल खाने वाले पशुओं ही की सी निकलीं। अतएव मनुष्य के फलभक्षी होने का यह दूसरा प्रमाण हुआ।

इन विदेशीय प्रमाणों से भी सिद्ध होता है कि मनुष्य की आदिम और मौलिक खुराक फल ही है और फलों के सेवन से मनुष्य कभी बीमार तो होता ही नहीं, प्रत्युत यदि बीमार हो भी तो अच्छा हो जाता है और सुदृढ़ तथा दीर्घजीवी हो जाता है। इसीलिए आर्यों ने अपनी मूल सभ्यता में फल और दूध ही को स्थान दिया है और कृषि को तथा कृषि से उत्पन्न होने वाले अन्नों को आपत्काल में खाने की व्यवस्था की है। व्रतों और उपवासों में फलाहार की महिमा से तथा आर्य रिवाजों और आर्य सभ्यता में पिरोई हुई विशेषताओं से यही सूचित होता है कि आर्यों का आहार सात्त्विक ही है, जिसमें फल और दूध, धृत की ही प्रधानता है। क्योंकि फल, फूल और दूध घृतादि सात्त्विक आहार ही अर्थ की पांचों शर्तों के साथ संग्रह हो सकते हैं और उन्हीं से आयु, बल, कान्ति, मेधा और सत्व आदि भी प्राप्त हो सकते हैं, तथा उन्हीं के आहार से संसार में किसी की आयु और भोगों में हस्तक्षेप भी नहीं हो सकता और योगाभ्यासादि मोक्षसाधन में भी सहायता मिलती है। इसीलिए आर्यों ने अपनी सभ्यता में सात्त्विक आहार को ही स्थान दिया है।

(स्व.पं.रघुनन्दन शर्मा जी के प्रसिद्ध ग्रंथ 'वैदिक सम्पत्ति' का संपादित अंश)

वाचनालय से

मिडिल ईस्ट मीडिया रिसर्च इंस्टीट्यूट, वाशिंगटन से सम्बद्ध तुफैल अहमद ने अपने लेख 'सेक्युलर कबीले के लोग' (**दैनिक जागरण**, लखनऊ) में खुद को सेक्युलर बताने वाले तत्वों के दोहरे मानदण्ड को उजागर किया है। तुफैल अहमद लिखते हैं कि भारत में मानवाधिकारों की चिन्ता का दावा करने वाले सेक्युलर पत्रकारों को तब गुस्सा नहीं आता जब पीड़ित हिन्दू होते हैं। भारतीय सेक्युलर वाद की आंखों पर एक खास किस्म का चश्मा चढ़ा हुआ है। इखलाक की हत्या से गुस्साए सेक्युलर पत्रकारों ने कई हत्याओं पर चुप्पी साध ली। पिछले अगस्त में सेना के जवान वेदमित्र चौधरी की मेरठ के पास हरदेव नगर में भीड़ ने पीट कर हत्या कर दी। मार्च में एक मुस्लिम लड़की के साथ शादी करने पर बिहार के हाजीपुर में एक हिन्दू की हत्या कर दी गई। पिछले जून में आंध्र में इलुरू के पास एक व्यक्ति को भीड़ ने मार डाला। जून में ही मुंबई के पश्चिम भाण्डुप इलाके में भीड़ ने एक व्यक्ति की हत्या कर दी। सेक्युलर पत्रकारों के चश्में इन हत्याओं को देखने से रोकते हैं। भारतीय सेक्युलर वाद को मुस्लिम खून का स्वाद लग गया है।

तुफैल अहमद लिखते हैं कि भारतीय सेक्युलर वाद पर एक खास रंग का चश्मा ही नहीं चढ़ा, वह आधा पाकिस्तानी भी है। सेक्युलर अखिलेश यादव ने लखनऊ में गुलाम अली की आवभगत की। अरविन्द केजरीवाल ने भी गुलाम अली से बात कर दिल्ली में उनका कार्यक्रम तय किया, लेकिन केजरीवाल और अखिलेश ने ऑस्कर पुरस्कार विजेता संगीतकार ए आर रहमान को तब आमंत्रित नहीं किया जब बरेलवी संगठन रजा अकादमी के फतवे के कारण १३ सितम्बर को दिल्ली में उनका कार्यक्रम रद्द कर दिया गया। सेक्युलरवाद भारतीय मुस्लिम गायकों को पसन्द नहीं करता। यह सलमान रशदी जैसे भारतीय लेखकों को भी पसंद नहीं करता। एक अन्य सेक्युलर नेता ममता बनर्जी ने भी गुलाम अली का यह कहते हुए समर्थन किया कि संगीत की कोई अंतरराष्ट्रीय सीमा नहीं होती, लेकिन वे बांग्लादेशी लेखिका तसलीमा नसरीन का समर्थन नहीं करेंगी।

तुफैल अहमद लिखते हैं कि भारतीय सेक्युलरवाद सचमुच पाकिस्तानी है.. राष्ट्रवाद के प्रतिकूल भी है। सेक्युलर वकील आतंकी यकूब मेमन का जीवन बचाने आधी रात को उच्चतम न्यायालय पहुँच गये, लेकिन आम भारतीयों के मृत्युदण्ड पर वे चुप बैठ जाते हैं। निखिल वागले ने लिखा है कि सेक्युलरवाद के बिना भारत हिन्दू पाकिस्तान है...भारतीय सेक्युलरवाद भारतीय तक नहीं है। यह गोमांस खाये बिना अधूरा है। यह गोमांस खाना पसन्द करता है, क्योंकि पाकिस्तानी गोमांस खते हैं। यह मूलतः पाकिस्तानी है।

'मदरसों में तिरंगा फहराना जरूरी' शीर्षक समाचार देते हुए '**जजमेण्ट आजतक**' (लखनऊ) लिखता है कि इलाहाबाद (उ.प्र.) उच्च न्यायालय ने मुख्य सचिव को निर्देश दिया कि वे खुद इसकी मॉनीटरिंग करें और सुनिश्चित करें कि १५ अगस्त और २६ जनवरी जैसे राष्ट्रीय पर्वों पर मदरसों में राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाये। अलीगढ़ के अजीत गौड़ की जनहित याचिका में कहा गया कि अलीगढ़ तमाम मदरसों में राष्ट्रीय पर्वों पर ध्वजारोहण नहीं किया गया। याचिका पर जावाब देते हुए प्रदेश सरकार के अधिवक्ता ने कहा कि अलीगढ़ के मदरसों में राष्ट्रगान गाया जाता है। उन्होंने राष्ट्रगान गाते हुए मदरसे की तस्वीर भी प्रस्तुत की। पीठ ने इस पर टिप्पणी करते हुए कहा कि यहाँ मामला राष्ट्रगान का नहीं राष्ट्रध्वज फहराये जाने का है। जो फोटो दिखाई जा रही है, उसमें बच्चे किताब देखकर राष्ट्रगान पढ़ रहे हैं। कोर्ट ने आश्चर्य जताया कि किताब देखकर कौन राष्ट्रगान पढ़ता है?

मासिक '**टंकारा समाचार**' (नई दिल्ली) में प्रकाशित स्व.स्वामी सत्यम के लेख 'रामायण : संकृति पर संस्कृति की विजय गाथा' पढ़ते समय एक रोचक गद्यखण्ड मिला। आप भी देखिए। आर्य बाहर से भारत में नहीं आए, अपितु भारत से बाहर की भूमियों में जाकर बसे। उनमें कुछ थे 'कृर्वाण' जिन्होंने अरब में 'नमस्' (नमाज़) और 'रामध्यान' (रामादान) को जन्म दिया। कुछ जो कालन्तरेण तामासिक बन गये थे 'शयानः' (चायना) कहलाये। जो उनमें शर्मन थे, स्वस्ति के उपासक 'रार्मण्य' (जर्मन) की सृष्टि की। महर्षि गौतम के शिष्यों ने अपने आचार्य का नाम प्रसिद्ध करने के लिये 'गौतमालय' (ग्वाटेमाला) की स्थापना की, जबकि महर्षि कणाद के शिष्यों ने 'कणादाः' (कनाडा) की स्थापना की।

'देवताओं के नाम पर पशुहत्या, मांस भक्षण महापाप है, कलंक है' का संदेश देता उमेद सिंह विशारद का लेख साप्ताहिक '**आर्य संदेश**' (नई दिल्ली) ने प्रकाशित किया है। उमेद सिंह लिखते हैं कि देवता किसी का अहित नहीं चाहते।... ईश्वरीय आज्ञा वेदों की शिक्षाओं से रहित होने के कारण मन्दिरों में भैंसा, बकरा, मुर्गा आदि काटकर बूचड़खाने का दृश्य उपस्थित किया जाता है। बिना पशुओं के मानव जीवन अधूरा है। पशुओं की हत्याओं से कभी सुख शान्ति नहीं आ सकती।

शुभाकांक्षा

अक्टूबर, २०१५ अंक पढ़कर 'पारस क्या होता है?' समझ में आ गया। आपकी पारस लेखनी के संस्पर्श से मेरे नाम से पृष्ठ सं.३ पर जो लेख प्रकाशित हुआ है- उसे लोहे से सोना बना हुआ मैंने देखा। लोहे में भी तो जंग का भाग होता है। अपने लेख में मेरा आशय यह भी रहा है कि हमारा वक्तव्य या प्रस्तुतीकरण इतना सशक्त, वैज्ञानिक और प्रामाणिक होना चाहिए कि वह दूसरों के विचारों को आन्दोलित कर दे। अन्य सम्प्रदायों के लोग यह सोचने पर मजबूर जो जांय उनकी आत्मा कहीं अविद्या के अंधकार में भटक तो नहीं रही?

आपका यह कथन एकदम सही है कि बिना विज्ञापन के 'आर्य लोक वार्ता'- (१९५७ में 'आर्य राष्ट्र' और ४१ वर्ष बाद आर्य लोक वार्ता) १७ वर्ष तक अनवरत प्रकाशित होना पत्रकारिता के इतिहास में एक अभूतपूर्व उपलब्धि है- जिसको जानकर हम पाठकों को भी सुखद गर्व की अनुभूति हो रही है।

'आर्य लोक वार्ता' में सम्पादकीय, सत्यार्थ प्रकाश वार्ता, दयानन्द चरितम्, सत्संग, शुभाकांक्षा, वेद प्रवचन, मनुष्य का विराट रूप, अनन्त की खोज, काव्यायन, समाचार संकलन इत्यादि सभी स्तम्भ विचारणीय, ज्ञानवर्द्धक, भक्तिरस, वीर रस, राष्ट्र गौरव से ओत्प्रोत हैं तथा ऋषि के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि समर्पित करते हैं; तथापि मुखपृष्ठ परक लेख प्रत्येक दृष्टि से अति प्रशसंनीय होता है। समसामयिक लेख 'साहित्यकार अपनी गरिमा समझें' आजकल चर्चा में आये उन बुद्धिजीवियों के लिए जो सम्मान लौटा रहे हैं; एक दर्पण है, जिसमें वे अपने आप को देखकर शर्मिन्दा हुए बगैर नहीं रहेंगे। अच्छा होगा यदि सच्चे ईमानदार लोकमंगल की अवधारणा से युक्त, देशवासियों को अन्याय के विरुद्ध लड़ने की प्रेरणा देने वाले अपनी लेखनी में सशक्तीकरण लाकर हुक्मरानों को न्यायोचित पक्षपातमुक्त शासन प्रदान करने के लिए और साहित्यकारों की प्रतिष्ठा स्थापित करने स्थापित करने के लिए मजबूर कर दें। सम्मान वापसी से ऐसा लगता है कि इन चाटुकार साहित्य कारों में आत्मविश्वास नहीं रहा। ओछे विचारों के चलते रहेगा भी कैसे?

'आर्य लोक वार्ता' में प्रकाशित आपके लेखों की जब मैं अखिल भारतीय स्तर के दैनिक पत्रों के लेखों से तुलना करती हूँ, तो निश्चय ही जो भाषा शैली, भावाभिव्यक्ति और चिन्तन आपके लेखों में है, वह अन्यत्र देखने को नहीं मिलता है। आपके लेखों का प्रकाशन राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में होना चाहिए। इससे पहले भी 'आर्य लोक वार्ता' में प्रकाशित 'हनुमान जी बन्दर नहीं थे' लेख अत्यंत सशक्त तथा प्रामाणिकता से परिपूर्ण था। मैंने कई पौराणिक लोगों को उक्त लेख पढ़ाया। कोई भी ऐसा नहीं मिला जिसने उसकी प्रशंसा न की हो। लेख को पढ़कर श्री हनुमान के वास्तविक एवं सत्य स्वरूप का उद्घाटन हुआ तथा कोई भी संशय बाकी नहीं रहा। आज अज्ञानान्धकार में भटके हुए लोगों की आँखें खोलने के लिए ऐसे ही लेखों की आवश्यकता है।

'आर्य लोक वार्ता' जैसे उच्चस्तरीय पत्र को आर्य सामाजिक विचारधारा रखने वाले उद्योगपतियों का कर्तव्य है कि यथेष्ठ आर्थिक सहायता बिना माँगे ही दिया करें। मैं एम.डी.एच. के अध्यक्ष महाशय धर्मपाल जी, श्री मुंजाल परिवार, एमिटी विश्वविद्यालय के स्वामियों तथा वैदिक साहित्य प्रकाशित करने वाली संस्थाओं एवं आर्य प्रतिनिधि सभाओं व अन्य राष्ट्रवादी संस्थाओं से अपील करना चाहूँगी वे 'आर्य लोक वार्ता' की सहायता के लिए आगे आयें। इससे बढ़कर दान देने के लिए सुपात्र कौन हो सकता है? साथ ही जो भी लोग 'आर्य लोक वार्ता' के मददगार हैं, इससे जुड़े हुए हैं, इसके प्रतिष्ठापक, संरक्षक, होता सदस्य या ऋत्विक् सदस्य हैं, उनके प्रति आभार व्यक्त करती हूँ।

मेरा सम्पादक जी से एक निवेदन और भी है। यदि आप अपने लेखों या सम्पादकीय लेखों में ऊपर 'अमृत पुत्रो सुनो' लिखा करें तो अच्छा होगा। मैं निवेदन ही कर सकती हूँ, आपको विवश तो नहीं कर सकती। त्रुटियों के लिए क्षमा याचना सहित।

-(श्रीमती) बलवीर कपूर
समर विहार, आलमबाग, लखनऊ-५

***

'आर्य्य लोक वार्ता' के मुख पृष्ठ पर

कवि की रचना धर्मिता तथा साहित्यकार के उत्तरदायित्व पर आपका लेख सटीक, बेबाक, ज्ञानवर्द्धक, संदेशात्मक, विचारोत्तेजक, शोधपरक एवं सामयिक है। एक सच्चे साहित्यकार को वास्तव में आत्म सम्मान एवं मर्यादा का सदैव पूर्ण ध्यान रखना चाहिए। उसे किसी प्रकार के निजी लाभ अथवा निहित स्वार्थ के लिए कदापि समझौता नहीं करना चाहिए और इस हेतु किसी के भी सम्मुख झुकना नहीं चाहिए। आपका सम्पादकीय आर्य समाज एवं तत्कालीन हिन्दी आन्दोलन से सम्बंधित आपके जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाओं को उजागर करता है। इससे एक यह नवीन जानकारी भी हुई कि 'आर्य्य लोक वार्ता' वस्तुतः १९५७ में आपके ही युवा सम्पादकत्व में प्रारंभ होने वाले 'आर्य राष्ट्र' नामक समाचार पत्र का ही एक नवीन एवं विकसित रूप है। श्रीमती बलवीर कपूर का अत्मकथ्य भी पठनीय है। 'मनुष्य का विराट रूप' तथा 'अनन्त की खोज' हमेशा की तरह सारगर्भित एवं ज्ञानवर्द्धक हैं। 'काव्यायन' की रचनाओं को गुनगुनाकर आह्लादित हो रहा हूँ। *-डॉ.मिर्ज़ा हसन नासिर*
जी-०२, लोरपुर रेजीडेंसी, न्यू हैदराबाद, लखनऊ

***

अक्टूबर २०१५ का अंक पढ़कर मुझे अपार प्रसन्नता का अनुभव हुआ। इसका प्रमुख कारण है- मुखपृष्ठ पर प्रकाशित डॉ.वेद प्रकाश आर्य, प्रधान सम्पादक का लेख- 'कवि तो समस्त सत्ताओं का प्रेरक है'। लेख का एक एक शब्द इतना भावपूर्ण है और अर्थपूर्ण है कि हृदय में उतरताचला जाता है। आपका यह लेख सम सामयिक होते हुए भी सार्वकालिक है और साहित्यकारों को यह संदेश देता है कि वे अपनी लेखनी की गरिमा पहचानें, उस पर भरोसा करें और क्षुद्र राजनीतिक स्वार्थों में पड़कर साहित्यिक परम्परा को लांछित न करें। सदा की भांति 'काव्यायन' की कविताएं हमें आन्दोलित करती हैं प्रेरणा देती हैं। 'थाल सजाकर' श्रीश्यामनारायण पाण्डेय की अमर रचना है, जिसको प्रकाशित करके आपने महान उपकार किया है। वेदमंत्र का काव्यानुवाद तो अद्वितीय है, अद्भुत है। धारावाहिक 'अनन्त की खोज' और 'मनुष्य का विराट रूप' भी बहुत प्रभावोत्पादक हैं। इनके अध्ययन से किसी भी व्यक्ति का जीवन सनाथ हो सकता है। मेरी कोटि कोटि शुभकामनाएँ आपके साथ हैं।

-(श्रीमती) ऊषा श्रीवास्तव
ए-११२, इन्दिरा नगर, लखनऊ

***

आर्य लोक वार्ता अक्टूबर अंक में

'प्रसंग वश' के माध्यम से कवि एवं साहित्यकारों की लेखनी की शक्ति को आपने समसामयिक एवं गरिमापूर्ण चिन्तन प्रदान किया है। यह कथित बुद्धिवादी समूह द्वारा येन केन प्रकारेण प्राप्त पुरस्कार/सम्मान लौटाने वालों के लिए सटीक प्रत्युत्तर है। आपका यह सोदाहरण अग्रलेख वर्तमान साहित्यकार पीढ़ी के लिए भी प्रकाश स्तम्भ है। एतदर्थ आपकी सशक्त लेखनी को नमन। आर्य समाज डालीगंज लखनऊ के स्थापना शताब्दी पूर्ति पर 'सम्पादकीय' चर्चा गौरवान्वित करती है। सौ वर्ष का कालखण्ड अविस्मरणीय और ऐतिहासिक तो है ही, इसका आर्य लोक में योगदान अनिर्वचनीय भी है। श्रीमती बलवीर कपूर के आत्मकथ्य ने हृदय को अभिभूत किया। आलेख में उठाये गए उनके बिन्दु विचारणीय हैं। जिनका सम्यक अनुपालन यथावांछित श्रेयस्कर होगा। 'काव्यायन' में श्रीश्यामनारायण पाण्डेय, उमाशंकर शुक्ल 'शितिकण्ठ', श्रीमती मंजुला जौहरी, राजाभ आदि की रचनाएं सशक्त, प्रेरक एवं हृदय स्पर्शी लगीं। 'विनय पीयूष' तथा अन्य नियमित स्तम्भों की विषयवस्तु जीवन का पाथेय प्रदान करती है। आन्तरिक साधुवाद। दीपावली पर्व आधुनिक भारत के महान युगदृष्टा महर्षि दयानन्द जी के निर्वाण से संपृक्त हैं, वह अलक्षित प्रज्ज्वलित दीप जो चिरकाल तक सम्पूर्ण विश्व का दिव्यालोकित करता रहेगा।

दीपपर्व पर दीप लघु, करते तिमिर विनाश।
दयानन्द ऋषि ने दिया, चिर 'सत्यार्थ प्रकाश'।
ऋषिवर के तन-दीप से, फैला दिव्यालोक।
शोक-मोह बन्धन कटे, जग हो गया अशोक।

-गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
११७, आदिलनगर, लखनऊ -२२६०२२

***

'आर्य लोक वार्ता' का अक्टूबर २०१५

अंक मिला। पढ़ा और गद्गद हो गया। मुखपृष्ठ का लेख 'कवि तो समस्त सत्ताओं का प्रेरक है, मार्गदर्शक है, निर्माता है' बड़ा ही शिक्षाप्रद और आज के साहित्यकारों को जागरूक करने वाला है। इस लेख के माध्यम से विद्वान लेखक डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल से लेकर वर्तमान आधुनिक काल तक के इतिहास को भलीभाँति मथ डाला है और अनेक उद्धरण प्रस्तुत किये हैं। इतना समझाने के उपरान्त भी यदि साहित्यकार अपनी मर्यादा गरिमा न समझें तो यह उसकी भूल व स्वेच्छाचारिता ही होगी। सत्संग कालम में जिज्ञासा और समाधान भी अच्छा व पठनीय है जिसमें सन्दर्भित ग्रंथों के नाम व लेखक भी दिये गये हैं। 'काव्यायन' में गौरीशंकर वैश्य विनम्र के 'शास्त्री जयन्ती' व श्रीमती मंजुला जौहरी की 'अन्तिम यात्रा' के दोहे अच्छे हैं। उमाशंकर शुक्ल 'शितिकण्ठ' की रचना 'विजयादशमी' रूप घनाक्षरी छन्द में निबद्ध है अच्छी है। कुल मिलाकर यह अंक संग्रहणीय है। सम्पादक जी को बहुत बहुत साधुवाद।

-दयानन्द जड़िया 'अबोध'
३७०/२७, हाता नूरबेग, सआदतगंज, लखनऊ

***

आर्य लोक वार्ता के अक्टूबर १५

अंक में सभी पठन सामग्री सम्पादकीय व अन्य स्तम्भों पृष्ठों को ध्यानपूर्वक पढ़ा। सबसे अधिक प्रभावित मैं हुआ 'होता सदस्य परिचय' श्रीमती बलवीर कपूर का उन्हीं के शब्दों में पढ़कर। आर्य समाज जैसी उत्तम श्रेष्ठ संस्था की स्थापना महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने की थी और उनके द्वारा बहुत विचार विमर्श के उपरान्त दस नियमों को बनाया था। श्रीमती बलवीर कपूर जो मूलतः सिख धर्म की अनुयायी हैं उन सभी दस नियमों से अत्यधिक प्रभावित रही हैं। इन नियमों के महत्व के विषय में उन्होंने स्पष्ट शब्दों में लिखा है कि 'इन दस नियमों के भाव को कोई मनुष्य यदि अपने जीवन में उतार ले और सत्यता पूर्वक इन नियमों के अनुरूप अपने गुण कर्म और स्वभाव को बना ले तथा तदनुकूल आचरण करने लगे तो उसे जीवन जीने के लिए अन्यत्र भटकना नहीं पड़ेगा।' श्रीमती बलवीर कपूर के हृदयोद्गारों को सभी वेद प्रेमियों और महर्षि दयानन्द के मिशन से जुड़े हुए सज्जनों महिलाओं बच्चों को पढ़ना चाहिए और सच्चे हृदय-मन से यह सोचना चाहिए कि उन्होंने अपने उक्त विचारों में क्या गलत लिखा है? मैं श्रीमती कपूर को हृदय से धन्यवाद देता हूँ। कृपया यह भी विचार कीजिए कि कुछ आर्य समाजों (लखनऊ व मेरठ) में अपने पत्रकों फोल्डर में आर्य समाज के दस नियमों में से प्रथम तीन नियमों को अकारण हटा दिया है- उन नियमों को जिन्हें हटाने के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी कभी तैयार नहीं हुए थे। यदि आर्य लोक वार्ता के पाठक अन्य वैदिक प्रेमी मेरे उक्त विचारों से सहमत हों तो हमें इस दिशा में काम करना होगा जिससे कि भविष्य में कोई भी आर्य समाज के दस नियमों में छेड़छाड़ न कर सके। मैं आर्य लोक वार्ता की प्रगति के लिए प्रार्थना करता हूँ।

-पाल प्रवीण
एम.एस.१२०, सेक्टर-डी, अलीगंज, लखनऊ

***

आर्य लोक वार्ता अक्टूबर अंक में श्रीमती बलवीर कपूर के आत्मकथन की एक-एक पंक्ति को मैंने बड़े गौर से पढ़ा। सारा वृत्तान्त इतनी रोचकता से परिपूर्ण है कि आद्योपान्त पढ़ने को विवश होना पड़ा। लेखिका श्रीमती कपूर ने मोतीनगर के जिस बालिका विद्यालय की चर्चा की है, वस्तुतः उसी विद्यालय में मैंने भी अध्ययन किया है और कभी अगर छात्रावस्था में बलवीर जी को देखा हो, तो कोई आश्चर्य नहीं। मेरा प्रारंभिक जीवन उसी क्षेत्र में व्यतीत हुआ। यद्यपि आर्य समाज और स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के संस्कार मुझे जन्मजात प्राप्त हुए तथापि उनका विकास उक्त विद्यालय में ही हुआ; जिसका वर्णन श्रीमती कपूर ने किया है। मेरे परिवार का और मेरे पुत्रों- विशेषकर डॉ.रजत बत्रा और पुत्रवधू मधु बत्रा वर्षों से 'आर्य लोक वार्ता' के सम्पर्क में रहे हैं और हमलोग 'आर्य लोक वार्ता' के विकास की सदैव कामना करते हैं।

-श्रीमती कृष्णा बत्रा
महानगर, लखनऊ

***

आर्य लोक वार्ता का सितम्बर अंक

पढ़ा। इस अंक के 'काव्यायन' में मुझे भी स्थान दिया गया है इसके लिए आभार एवं कृतंज्ञता ज्ञापन। सम्पादकीय 'खुल रहे हैं नये गवाक्ष' पढ़कर पवीन जानकारी युक्त विचारों ने मुझे आनंदित किया। सभी स्थायी स्तम्भों में प्रस्तुत सामग्री पत्र की गरिमा के सर्वथा अनुकूल है। 'कालजयी काव्य' स्तम्भ से हमें पहले के काव्य सृजन से परिचित होने के साथ उसके अवगाहन का भी सहज अवसर प्राप्त होता है। लखनऊ के सितम्बर माह के समाचारों की भी जानकारी मिल जाती है

-राजाभइया गुप्ता 'राजाभ'
६१६/२२७, बसंत विहार, सेमढ़ा गौड़ी, निकट विश्वनाथ पार्क, लखनऊ-२२६०२१

***

आर्य लोक वार्ता अक्टूबर अंक में

प्रथम पृष्ठ पर 'कवि तो समस्त सत्ताओं का प्रेरक और मार्गदर्शक होता है सम्पादक जी ने मनोवैज्ञानिक तरीके से अच्छा प्रकाश डाला है। आपकी सम्पादकीय बहुत ज्ञानवर्द्धन करने वाला और खोजपूर्ण तथ्यों से परिपूर्ण है तथा हमारी जीवन शैली में प्रतिबिम्बित होता है और पाठकों को प्रेरणा देने वाला है। हमेशा आगे बढ़ने के लिए उज्ज्वल भविष्य के लिए प्रयत्नशील रहने की प्रेरणा देने वाला है। 'वेद प्रवचन' में पं.शिव कुमार शास्त्री का चयनित मंत्र अति उत्तम है सभी को याद होना चाहिए और अपना जीवन इसी के तौर तरीकों से ढालना चाहिये तभी मानव जीवन की सार्थकता है। 'मनुष्य का विराट रूप' बहुत ही उच्च स्तरीय है और अपने अन्दर विराजमान कर सकने वाला साधक ही प्रभु के प्रति श्रद्धा भक्ति का अहसास होने पर ही उसे अपनी दिव्यता और अमरता की अपने आप अनुभूति होती है। ऐसा व्यक्ति भयभीत नहीं होता और उस अविनाशी परमात्मा का चिन्तन करता है और भय स्वयं नष्ट हो जाता है। आनन्द कुमार जी ने कई उदाहरणों के द्वारा इसकी पुष्टि की है।

व्याख्यान माला में 'अनन्त की खोज' बहुत ही महत्वपूर्ण लेख है। 'काव्यायन' की सभी कवितायें अच्छी हैं फिर भी श्रीमती मंजुला जौहरी की कविता जीवन का सत्य दर्शाती है बहुत पसंद आयी। इसके अलावा तीर्थयात्रा शीर्षक श्रीश्यामनारायण पाण्डेय की कविता अपने देशभक्त बलिदानी वीरों पर हमें गर्वित होने की प्रेरणा देती है। आर्य लोक वार्ता अनेक उच्चविचारों से परिपूर्ण पत्रिका है। प्रत्येक बार अनेक प्रेरणायें प्राप्त होती हैं जो जीवन के मार्गदर्शन में सहायक होती हैं। *-प्रमोद कुमारी*
एम.एस.३७, सेक्टर-डी, अलीगंज, लखनऊ

***

धारावाहिक-(58)

मनुष्य का विराट् रूप

-आनन्दकुमार-

ज्ञान के विकास से भय का विनाश किस प्रकार होता है- यहाँ हमें इसी पर विचार करना है। किसी बच्चे के जीवन का अध्ययन कीजिए तो यह स्पष्ट हो जायगा। बच्चा जबतक अबोध रहता है, तबतक वह अपनी माँ की गोद छोड़कर अन्य किसी के पास जाने में भी घबड़ाता है। दूसरे उसे अपनाना चाहते हैं, परन्तु वह उनसे अपरिचित होने के कारण उससे स्वभावतः भयभीत रहता है। थोड़ा बड़ा होने पर वह अपने कुटुम्बियों को जानने-पहचानने लगता है। तब उनसे उसे भय नहीं लगता। परन्तु उस दशा में भी बाहरी लोगों से उसे अकारण अपने अहित की आशंका रहती है। उनसे वह बचना चाहता है। ज्ञान-विवेक की कमी के कारण वह बहुत-सी बातों से अनभिज्ञ रहता है, इसलिए साधारण घटनाओं से चौंकता है और जिस वस्तु को वह नहीं पहचानता उसके सम्बन्ध में एक मिथ्या धारणा बना लेता है। अन्धेरे को वह भूतों का साम्राज्य मानता है, सियार की बोली को मौत की पुकार मानता है और बिल्ली को शेर। इसी प्रकार अनेक विषयों मे उसे धोखा होता है। वही बालक जब थोड़ा-बहुत सज्ञान हो जाता है तो उसके अनेक भय अपने आप मिट जाते हैं। उसे बाहरी लोगों से मिलने-जुलने में झिझक नहीं होती। वह अधिक से अधिक लोगों के सम्पर्क में रहना चाहता है। तब न वह रात से डरता है, न सियार से और न बिल्ली से। उसे अपनी ज्ञान-दुर्बलता पर स्वयं हँसी आती है। इस प्रकार हम देखते हैं कि ज्यों-ज्यों ज्ञान बढ़ता है, परिपक्व होता है, त्यों-त्यों मनुष्य निर्भय और सबल होता है।

एक दूसरा उदाहरण लीजिए। कोई भी व्यक्ति जबतक जीवन के यथार्थ स्वरूप से अपरिचित रहता है, तबतक भाँति-भाँति की अनिष्ट शंकायें उसे दिन-रात सताती हैं। उसकी एक बहुत बड़ी शंका तो यही होती है कि कहीं अचानक मृत्यु न आ जाय। शरीरनाशक व्याधियों, रोग के कीटाणुओं और शत्रुओं से वह प्रत्येक क्षण चिन्तित रहता हैं शारीरिक कष्टों के भय से वह अपने कर्त्तव्य कर्म में भी हाथ नहीं लगाता। वही व्यक्ति जब जीवन के तत्त्व को समझ लेता है, तब उसे अपने शरीर की परवाह नहीं रहती, तब उसे शारीरिक दुःखों का भय नहीं लगता और तब उसे अकालमृत्यु क्या कालमृत्यु का भी ध्यान नहीं आता। वह इस तथ्य को जानकर शोक-रहित हो जाता है कि मरणधर्मा मनुष्य अनाज की भाँति ही पुनः उत्पन्न हो जाता है- 'सस्यमिव मर्त्यः पच्यते सस्यमिव जायते पुनः'-कठोपनिषद्। उसे इसका विश्वास हो जाता है कि वह मृत्यु बिना समय के कभी नहीं होती, यह निश्चित है- 'ध्रुवं ह्यकाले मरणं न विद्यते'-वाल्मीकि। इस दशा में वह मृत्यु-भय से मुक्त होकर अपना कर्त्तव्य करता है। साधारण व्यक्तियों की भाँति उसे रोग के कीटाणुओं के आक्रमण की शंका नहीं होती। डाक्टर लोग चाहे जो कहें, वह इसका अनुभव करता है कि भगवान् की सृष्टि में घातक तत्त्वों की अपेक्षा जीवणु अधिक प्रबल हैं, तभी सृष्टि चल रही है। उसे दूसरे शब्दों में अपने शत्रु की छाया नहीं दिखाई पड़ती क्योंकि वह प्राणिमात्र को अपने जैसा मानने लगता है। ज्ञान के प्रभाव से विचार और दृष्टिकोण में ऐसा परिवर्तन हो जाता है। उसके द्वारा बहुत-से सांसारिक भयों की जड़ कट जाती है। दूसरे शब्दों में यह कहना चाहिए कि ज्ञानोदय से आध्यात्मिकता का विकास होता है और उसके परिणाम-स्वरूप भौतिक विकार उसी प्रकार नष्ट हो जाते हैं जैसे सूर्योदय से अन्धकार। मनुष्य स्वस्थ, सचेत, सबल और सक्रिय हो जाता है।

एक उदाहरण और लीजिए। एक मनुष्य जो साइकिल पर चढ़ना नहीं जानता, वह उसका उपयोग नहीं कर सकता। उसे उस पर बैठने में भी डर लगता है। वही मनुष्य जब साइकिल चलाना सीख लेता है, तब उसका भय निकल जाता है और वह वस्तु उसके काम की हो जाती है। किसी भी व्यवसाय में मनुष्य तबतक दक्ष नहीं होता, जबतक वह उसमें हाथ लगाने से डरता है और उसके लाभ से वंचित रहता है। अनाड़ी आदमी मशीन चलना नहीं जानता। उससे मशीन चलाने को कहिए तो वह साहस नहीं करेगा। उसके द्वारा वह अपनी जीविका नहीं चला सकता। उसी को यदि मशीन चलाने की विद्या मालूम हो जाय तो वह उसको उसी प्रकार निर्भय होकर चलाएगा, जैसे कोई लठैत लाठी चलाता है। कला-कौशल का ज्ञान होने पर बेकारी का भय स्वतः दूर हो जाता है। गुणी, क्रिया-विशेषज्ञ को कर्म-हानि की आशंका कहाँ रहती है? उसकी योग्यता उसे हतबुद्धि अथवा निरुपाय नहीं होने देती। उसे अपनी विद्या और कला पर भरोसा रहता है। अपने कार्य में वह न तो असमर्थता का अनुभव करता है और न घबराता या छटपटाता है।

स्थानाभाव से इस विषय के स्पष्टीकरण के लिए हम अधिक नहीं केवल एक उदाहरण और देंगे। किसी देहाती, या कूपमंडूक को देखिए। वह दूसरों से मिलने जुलने में डरता है। उसके मन में इस प्रकार के भय रहते हैं कि कहीं उल्लू न बनना पड़े, हँसी न हो, कोई भद्दी बात मुँह से न निकल जाय, काम न बिगड़ जाय। एक न एक त्रुटि की कल्पना करके वह भीतर ही भीतर काँपता है और प्रायः गलती कर भी जाता है। व्यावहारिक ज्ञान न होने के कारण ही तो उसकी यह दशा होती है। इसके विपरीत किसी व्यवहारज्ञ को देखिए। उसे मूर्ख बनने का भय नहीं होता। वह जानता है कि किस समय किसके साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए और किस ढंग से काम निकालना चाहिए। इसलिए वह दृढ़ आत्मविश्वास के साथ दूसरों के साथ सद्व्यवहार में नहीं चूकता। व्यवहार दक्षता से बुद्धि में प्रगल्भता आती है।

इन उदाहरणों से हम यह समझ सकते हैं कि भय के प्रतिकार के ज्ञान कितना आवश्यक है। वास्तव में, ज्ञान एक दैवी शक्ति हे। ऋषियों ने उसे ब्रह्म-स्वरूप माना है। उसके आगे भय के भूत ठहर ही नहीं सकते। उससे बुद्धि की शुद्धि और वृद्धि होती है। मनुष्य को ज्ञानी होना चाहिए। केवल एक विषय का ज्ञानी होना पर्याप्त नहीं है। जीवन का विषय अत्यन्त विस्तृत है। इसलिए मनुष्य को बहुज्ञ होना चाहिए। जो जितने विषयों को जानता है, उसका उतने ही विषयों पर अधिकार होता है। उन विषयों में उसी बुद्धि भ्रमित और व्याकुल नहीं होती। *(मनुष्य का विराट् रूप से साभार, क्रमशः)*

व्याख्यान माला (15)

अनन्त की खोज

-महात्मा आनन्द गिरि-

पाखण्डी शोषक वर्ग ने इस कमजोरी को पहचाना और लाभ उठाने का षडयन्त्र रचा। श्राप, वरदान, देवता-देवी, जन्त्र, मन्त्र, चमत्कार, शुभ-अशुभ, भाग्यवाद, कहाँ तक गिनाया जाय- हजारों विकृतियाँ फैलती गईं। आप जानते हैं न? जब गुर (Formula) ही गलत है तो उससे निकलने वाला हल ठीक कैसे हो सकता है। इतिहास मनोविज्ञान की दृष्टि से जब आप विचारेंगे तो यह सत्य निकलेगा कि हमारे पतन का कारण मूल से कट कर अलग हो जाना था। महर्षि दयानन्द ने इस तथ्य को समझा। उन्होंने वेद के महत्व और गरिमा का पुनर्स्थापन किया। वैदिक ज्ञान के प्रकाश में प्रचलित विश्वास और धारणाओं का मूल्यांकन किया। इस कसौटी पर जो खरा नहीं उतरा उसे अस्वीकारा। निर्मोही बनकर कठोरता से प्रत्येक सिद्धान्त और मान्यता की अग्नि परीक्षा ली जो भी वेदादि सद् शास्त्रों के अनुकूल ग्राह्य है, और जो प्रतिकूल है त्याज्य है। यह मूल मन्त्र प्रदान किया। इसका यह अर्थ नहीं कि ऋषि अन्य ग्रन्थों को नहीं मानते थे। इसका अर्थ है कि वह केवल वेद या वेदानुकूल ग्रन्थों को प्रमाण की कोटि में लेते थे। वस्तुतः उनका कार्य कुछ इस प्रकार का था। मैं एक घटना सुनाने का लोभ संवरण नहीं पर पाऊँगा।

मैं आगरा जा रहा था। वहाँ मुझे कुछ दिन ठहरना था। मेरी बहन ने अपने पुत्र को देख आने के लिए कहा। उनका लड़का उन दिनों मेडिकल का छात्र था और होस्टल में रहता था। गाड़ी से उतर कर मैं सीधा होस्टल पहुँचा। वह कमरे में था किन्तु कमरे का दरवाजा बन्द था। मैंने खटखटाया। 'कौन है बे' अन्दर से आवाज आई। मैं क्या जवाब देता मैंन फिर दरवाजा खटखटाया। आखिर उसने दरवाजा खोला और देखते ही बोला-'चिट्ठी न पत्री एक दम कैसे आ गए?' 'हाँ भई गलती हो गई'-कहते हुए मैंने कमरे में प्रवेश किया। मित्रों क्या बताऊँ? कमरा क्या था जैसे कबाड़ी की दूकान। बेड के दोनों तरफ मैले और धुले कपड़ों का ढेर, नीचे जूते मोजों का सैलाब, सिरहाने रखी मेज पर किताबों कापियों के साथ-साथ बीसियों चीजों का जमघट। फर्श पर माचिस की बुझी तीलियां और सिगरेटों के टुकड़े फैले थे। सूटकेश और वारड्राप खाली खुले पड़े थे। मैं कुर्सी पर बैठ गया। वीर भूषण मुझसे बोला कि वह प्रैक्टिकल के लिये जा रहा है एक डेढ़ घण्टे में आ जायेगा। उसके चले जाने पर मैंने सोचा कि उसका कमरा साफ कर दिया जाय। धुले कपड़े सूटकेश में और वारड्राप में लगा दिया। बुकशेल्फ पर किताबें लगा दी और स्टैण्ड पर जूते चप्पलें व्यवस्थित कर दी। झाड़ पोंछकर उसका कमरा स्वच्छ कर दिया। लगभग दो घंटे बाद वह आया। कमरे को देखकर बोला- 'ओफ यह क्या किया?' आपने तो मेरा सारा कमरा ही अव्यवस्थित कर दिया।' 'नालायक धन्यवाद देने का क्या यह मेडिकल तरीका है? बता कमरा व्यवस्थित है या अव्यवस्थित?' मैंने कहा। वह बोला- 'मामा पहले बड़ा आराम था। हर चीज बेड के आसपास थी। न ढूंढने की जरूरत न उठने की। अब आपने ऐसा कर दिया कि हर चीज ढूँढनी पड़ेगी और कमरे में अनावश्यक चक्कर लगाने पड़ेंगे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी ऐसा ही काम किया था। सत्य की झाड़न से हजारों वर्ष की फैली हुई गन्दगी को झाड़ पोंछ कर निकाला फेंका और प्रत्येक वस्तु को यथा योग्य स्थान पर रखा। राम कृष्ण को मानव से ईश्वर बना दिया गया था। परिणाम स्वरूप मानव समाज आदर्शहीन और अनाथ बन गया था। मनुष्य कृत ग्रन्थ जो स्वभाव से अपूर्ण और अर्ध सत्य हैं जीवन पर छा गये थे। ऋषि ने हम मनुष्यों से छीने गये राम और कृष्ण को पुनः दिलवाया। राम और कृष्ण मानव बन गए तथा उनका जीवन अनुकरण का विषय हो गया। उस महा पुरुष ने मनुष्य कृत ग्रन्थों को यथास्थान रखा तथा वेद को उसकी गरिमा प्रदान की। वस्था को दूर किया। उसका चिन्तन ध्वंसात्मक नहीं सृजनात्मक है। उनकी प्रेरणा का मूलस्रोत अन्धविश्वास और पाखण्ड नहीं और न मूर्खता पूर्ण भावुकता है। अपौरुषेय ज्ञान वेद उनके चिन्तन की आधार शिला है।

प्रिय मित्रों,

आप आर्य समाज के उत्सव और सत्संग में आते रहते हैं। वेद शब्द आपके लिए अपरिचित नहीं होगा। फिर भी वेद शब्द का अर्थ आपके आगे रखना मैं अप्रासंगिक नहीं समझता हूँ। वेद वैदिक भाषा का शब्द है और व्युत्पत्ति विद् धातु से करण और अधिकरण कारक में घञ प्रत्यय करने से हुई है। धातु पाठ में विद् धातु चार अर्थों में मिलती है- विद् ज्ञाने, विद् सत्तायम्, विद् लृ लाभे, विद् विचारणे। ऋषि दयानन्द ने वेद शब्द का अर्थ किया है- 'जिसके द्वारा अथवा जिसमें सब मनुष्य समस्त सत्य विद्याओं को जानते हैं, प्राप्त करते हैं, विचार करते हैं और विद्वान होते हैं, वह वेद है। हम ऐसा भी कह सकते हैं कि वह विचार जो सत्ता का यथातथ्य विचार देता है और भद्र करता है, वेद है। वेद का सरल अर्थ है ज्ञान। ज्ञान का मतलब है अस्तित्व की ऐसी व्याख्या जो विचारों द्वारा ग्राह्य हो। जिसमें जीवन का कल्याण हो। वेद शब्द का अर्थ केवल मात्र पुस्तक नहीं। भाषा और लिपि माध्यम है जिसके द्वारा वेद को अभिव्यक्त किया गया है। चूंकि मनुष्य स्वभाव से ज्ञानी नहीं है अस्तु जीवन के विकास के लिए परम पिता परमेश्वर ने उसे यह ज्ञान दिया। वेद का प्रतिपाद्य काल्पनिक देवी देवताओं की पूजा नहीं है और न दार्शनिक विवेचन करके किसी मान्यता की स्थापना करना है। इसका प्रयोजन है कि यह रचे गए संसार की व्याख्या करे तथा उस सूक्ष्म तत्व को प्रकट करे जो सब का मूल है।

'वृहस्पति राङ्गि रसः ज्ञानम्।।

वृहस्पते प्रथमं वाचो अग्रं येत प्रैरत नाम धेयं दधानाः।'

बाल्यावस्था में अगर तुम्हें कोई वस्तुओं के नाम और गुण न बताता तब क्या आप सांसारिक चीजों को पहचान सकते? जैसे तुम अपने पुत्र को प्रत्येक उस चीज का बोध कराते हो जो उसके जन्म के पहले से चली आ रही है। उसी प्रकार परमात्मा ने वेद द्वारा सृष्टि और जीव का बोध कराया है। मन्त्रांश में कहा गया है कि बृहस्पति ने सृष्टि के प्रारम्भ में वाणी को प्रेरित करके नाम रूप का ज्ञान प्रदान किया। वेद शुद्ध विज्ञान की तरह है और ब्राह्मण ग्रन्थ प्रायोगिक विज्ञान की तरह हैं। बीज रूप से सब सत्य विद्याओं का दान परमात्मा ने दिया।

कालान्तर में ऋषियों ने अनुभव से जिसका प्रत्यक्ष किया। इसका एक प्रसिद्ध नाम श्रुति भी है। ब्रह्म उपदिष्ट यह ज्ञान ऋषियों द्वारा सुना गया था। अतः श्रुति कहलाया। वेद के दो रूप हैं- दृश्य वेद और श्रव्य वेद। यह समस्त ब्रह्माण्ड दृश्य वेद है। विश्व ब्रह्माण्ड की प्रत्येक नाम रूपात्मक वस्तु लिपि के समान है। अगर तुम इसको समझना जानते हो तो अस्तित्व का रहस्य खुल जायगा। छोटे से अणु से लेकर विराट ग्रह नक्षत्र जो चारों ओर गतिमान हैं परमात्मा की सर्वसत्ता को प्रकट करते हैं। वे सब वेद में जिन्हें देवता कहा गया है वस्तुतः ईश्वर की विजय के ध्वजवाहक हैं। 'देवं वहन्ति केतवः'-श्रुति ने कहा- देवगण ईश्वर की सर्वशक्तिमत्ता के ध्वज का वहन करते हैं। इस दृश्य वेद का परिचय श्रुति प्रदान करती है। श्रुति जो कुछ कहती है उसकी वयाख्या विश्व ब्रह्माण्ड है। इसलिए ऋषि दयानन्द ने कहा कि वे सृष्टि विद्या के अनुकूल है और जो कुछ सृष्टि विद्या के अनुकूल है वह सत्य है और माननीय है। ऋषियों ने वेद का माता की संज्ञा प्रदान की हे। इस छोटे से विशेषण द्वारा सारा रहस्य खोल दिया गया है।

'वेद माता प्रचोदयन्ताम्'

(वेद माता हमें प्रेरित करें)

मैंने कई बार विचारा कि वेद माता शब्द का रहस्य क्या है? जैसे माता पुत्र को संसार की संज्ञाएँ सिखाती है वैसे ही वेद भी नाम रूप का उपदेश करते हैं? यही अर्थ है? ऐसा भी तो हो सकता है कि संज्ञाओं का पदार्थों का ज्ञान अन्य दे दे। फिर वेद माता शब्द का क्या रहस्य है? इस माता शब्द के प्रयोग में कुछ न कुछ रहस्य तो होना ही चाहिए। मुझे रह रह कर ऐसा लगता रहा कि इसके अतिरिक्त कुछ और भी ऐसी बात है जो मेरी समझ से बाहर है। और एक दिन वह रहस्य खुल ही गया। मैं इस तथ्य का आपके सामने रखूँ उसके पूर्व मुझे एक बात याद आ गयी। दोस्तेवास्की ने एक उपन्यास लिखा है-'द ब्रदर्स क्रोमोजोम'। उसमें एक पात्र के मुख से कहलवाया गया है कि-'आश्चर्य जनक और विस्मयकारी यह बात नहीं है कि परमात्मा का अस्तित्व है। आश्चर्य की बात तो यह है परमात्मा के अस्तित्व का श्रेयस्कर विचार मनुष्य जैसे बर्बर प्राणी के मस्तिष्क में कैसे आया?' पश्चिम ने इस प्रश्न का उत्तर विभिन्न प्रकार से दिया है। आज का विद्यार्थी संस्कृति और सभ्यता के विकास की पुस्तकों में इसका उत्तर पढ़ता है। प्रकृति के भय से, अन्ध विश्वास से आश्चर्य से ग्रसित आदि मानव ने अलौकिक शक्ति की कल्पना की। ऐसी शक्ति जो ऋतु बदलती है, आँधी तूफान पैदा करती है, महामारी फैलाती है और फसल पकाती है इत्यादि। इस कल्पना का सुघड़ परिष्कृत रूप ईश्वर है। आपने भी ऐसा सुना या पढ़ा होगा। यह प्रश्न मेरे हृदय में भी उत्पन्न हुआ। उपन्यास पढ़ने का आखिर कुछ तो प्रभाव होना ही चाहिए। अबतक एक प्रश्न बेचैन किये था उपन्यास पढ़ने में व्याकुलता और बढ़ गयी। *(क्रमशः)*

काव्यायन

महर्षि निर्वाण पर्व-दीपावली

दयानन्द था इस ज़माने का रहनुमा

❑सूफी फकीर रहीम बख़्श

सचाई पर झुठाई कभी ग़ालिब आती नहीं।
और वलियों की जुबां से बुराई सुनी जाती नहीं।।
किसी चीज़ की कीमत उसका वक़्त आने पर होती है।
मुल्क हिन्द में वलियों की कीमत ज़माना गुज़र जाने पर होती है।

दयानन्द ने ही इस मुल्क को गहरी नींद से जगाया।
हाय अफसोस कि एवज में हमने उन्हें जहर पिलाया।।
हिन्दू हो चाहे हो मुसलमां इस मुल्क हिन्द का।
इंसाफ से बोलो कि दयानन्द था इस जमाने में रहनुमा सबका।।

वतन को बचाया मजहब को बचाया।
था इन पर अंग्रेजों का गलवा छाया।।
मेरा हाथ जोड़ के है उनके कदमों में सलाम।
मेरा जमीर का है यही सच्चा ईमान और पैग़ाम।।

(स्वामी जी के देहावसान पर सूफी फकीर रहीम बख़्श की मार्मिक श्रद्धांजलि-विष्णु प्रभाकर कृत 'भारतीय साहित्य के निर्माता : स्वामी दयानन्द सरस्वती' से साभार))

सम्मान लौटाने वालों से

❑गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

बुद्धिजीवियों को मिला, अतिविलम्ब से ज्ञान,
अच्छा है लौटा दिए, पुरस्कार - सम्मान।
पुरस्कार - सम्मान, नाम दो बार कमाया,
पहला पाते समय, दुबारा जब लौटाया।
हुए हैं अत्याचार, कहाँ के कला सेवियों,
लौटाओ धन - मान, प्रशंसा बुद्धिजीवियों।

लौटाया सम्मान को, अन्तिम देख पड़ाव,
सहिष्णुता की सोच से, कब से हुआ जुड़ाव।
कब से हुआ जुड़ाव, धूर्तता खलने वाली,
पद-चुम्बन से नहीं, दाल अब गलने वाली।
वंशवाद के संकीर्तन से, यश था पाया,
बन्दर घुड़की दिखा, मान अब है लौटाया।।

पुरस्कार-यश प्राप्त कर, अब जागे हो तात।
जिस सीढ़ी से थे चढ़े, उसे मार दी लात।
उसे मार दी लात, पाल कर कुछ कुण्ठाएँ,
सुविधाओं के लिए, संजोयी उत्कण्ठाएँ।
आसमान में थूक, बहोरा व्यापक अपयश,
अपमानित विक्षुब्ध हुआ है पुरस्कार-यश।।

-117, आदिल नगर, विकास नगर, लखनऊ-226 022

नये रंगों से परिचित हो गये!

❑डॉ. कैलाश निगम

एकता के भाव जब चेहरे में अंकित हो गये।
सभ्य, शिक्षित, आत्मसम्मानी भी हर्षित हो गये।।

चापलूसी, द्वेष, सुविधा-शुल्क, हिंसा और अधर्म
हम भी इस युग के नये रंगों से परिचित हो गये।

बैरियों से नर्म बातों का यही परिणाम हुआ
सब अहिंसा के पुजारी रक्तरंजित हो गये।

आप ज्ञानी, बुद्धिजीवी और मनीषी थे अगर
आज क्यों सत्ता के चरणों में समर्पित हो गये।

मिल रहा है पाप का फल आदमी को इस तरह
देखिये भगवान से संवाद बाधित हो गये।

मिलना था जो निर्धनों को, शोषकों का मिल रहा
अनगिनत बच्चे सुकोमल हैं, कुपोषित हो गये।

दुख में संकट के समय आया न कोई सामने
आज सुख में ढेर से 'कैलाश' के हित हो गये।

-4/522, विवेक खण्ड, गोमतीनगर, लखनऊ

नया दीवाना- पुरानी डगर

❑डॉ.मिर्ज़ा हसन नासिर

राह सीधी सरल गही मैंने,
बात दर्पण के सम कही मैंने।

अपनी काया में नित सँवारे हैं,
जल अनल वायु नभ मही मैंने।

उसकी आँखों में डालकर आँखें,
अनकही बात भी कही मैंने।

मैं भी दीवाना था नया लेकिन,
वो पुरानी डगर गही मैंने।

फिर हुआ अन्त एक मजनूँ का,
फिर कहानी सुनी वही मैंने।

ज़िन्दगानी थी राम का वनवास,
थक गया था तजी मही मैंने।

आज फिर उनकी याद आई है,
आज फिर इक ग़ज़ल कही मैंने।

मैंने छोड़ी नहीं वफ़ा 'नासिर'
इश्क़ में हर जफ़ा सही मैंने।

-जी-02, तोलपुर रेज़ीडेन्सी, न्यू हैदराबाद, लखनऊ

वैदिक दोहे

❑ओम प्रकाश आर्य

वेदग्रन्थ सबसे बड़े, जो हैं ईश्वर ज्ञान।
ऋषियो के उर में हुए, प्रकटीभूत महान।।

वैदिक ज्ञान प्रचार को, करता आर्य समाज।
ढोंग और पाखंड का, मिटा रहा सब खाज।।

दुनिया में मत-पन्थ हैं, लाखों और हजार।
वैदिक मत सबसे पुरा, करलो इससे प्यार।।

ऋषि दयानन्द ने किया, मानव का उद्धार।
वेदों का दे ज्ञान को, किया तर्क संचार।।

यज्ञ-हवन प्रतिदिन करो, प्रातः सायंकाल।
रोग नष्ट होंगे सभी, पर्यावरण बहाल।।

-आर्य समाज, रावतभाटा, कोटा (राजस्थान)

हर्ष-चतुष्पदी

विश्व गुरू का सपना

❑बाँके बिहारी 'हर्ष'

शीना मर्डर मैटर पाया साफ,
पुरानी तकिया नया गिलाफ।
कितने मैटर रोज बरोज,
तन मन धन सब जमीन्दोज।

शासन और प्रशासन तंत्र,
रोज पढ़ रहे स्वाहा मंत्र।
लेकर यही खूबियाँ खास,
विश्व गुरु सपना बकवास।

-अवध मोटर वर्क्स, सिविल लाइन्स, फैजाबाद

कालजयी काव्य

यह दीप अकेला

❑सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'

यह दीप अकेला स्नेह भरा
है गर्व भरा मदमाता पर
इसको भी पंक्ति को दे दो

यह जन है : गाता गीत जिन्हें फिर और कौन गायेगा
पनडुब्बा : ये मोती सच्चे फिर कौन कृति लायेगा?
यह समिधा : ऐसी आग हठीला बिरला सुलगायेगा
यह अद्वितीय : यह मेरा : यह मैं स्वयं विसर्जित

यह मधु है : स्वयं काल की मौना का युगसंचय
यह गोरस : जीवन-कामधेनी का अमृत-पूत पय
यह अंकुर : फोड़ धरा को रवि को तकता निर्भय
यह प्रकृत, स्वयम्भू, ब्रह्म, अयुतः
इसको भी शक्ति को दे दो

यह वह विश्वास, नहीं जो अपनी लघुता में भी काँपा,
वह पीड़ा, जिसकी गहराई को स्वयं उसी ने नापा,
कुत्सा, अपमान, अवज्ञा के धुँधुआते कड़वे तम में
यह सदा-द्रवित, चिर-जागरूक, अनुरक्त-नेत्र,
उल्लम्ब-बाहु, यह चिर-अखंड अपनापा
जिज्ञासु, प्रबुद्ध, सदा श्रद्धामय
इस को भक्ति को दे दो

यह दीप अकेला स्नेह भरा
है गर्व भरा मदमाता पर
इसको भी पंक्ति को दे दो

(कविता कोश' से साभार)

दीपमालिका

❑दिनेश मिश्र 'राही'

दीपमालिका में सजे, गाँव, गली गलियार,
जले प्यार के दीप जब, भागे कुल अंधियार।
भागे कुल अंधियार, तमस भी रह ना जाये,
भेद भाव सब त्याग, प्रेम का कुंज सजाये।
न्याय करें हर साथ, बने हर न्याय पालिका,
मिले सदा हर वर्ष, सभी को दीपमालिका।।

कूड़ा कचरा फेंक कर, साफ रखें घर द्वार,
स्वस्थ रहें नित, कह रहा दीवाली त्योहार।
दीवाली त्योहार, रोज हर स्वप्न सजाये,
हो निरोग हर एक, भाव घर घर पहुंचाये।
तन मन हो बलवान, न हो जीवन में खतरा,
जला दीजिये आज, दिलों का कूड़ा कचरा।।

-अम्बिका पुरम, आनन्द नगर, सीतापुर (उ.प्र.)

दीपपर्व

❑रुद्र प्रकाश गुप्त 'सरस'

बातों के बतासों में न तिरती मिठास रहे,
अपनो का प्रेम कुछ काम करने लगे।

जातिवाद-वर्गवाद छोड़ यह देश जन,
भारतीयता की बात ध्यान धरने लगे।

क्रूरता के कृत्यों में कमी का कुछ योग बने,
पाप कर्म करने में व्यक्ति डरने लगे।

दीपमालिका से कोई ज्ञान का प्रकाश फैले,
किसी दुखिया का कोई दुःख हरने लगे।।

खुशियों की हो आज से, कुछ ऐसी बरसात।
होली तक हो अनवरत, मीठी-मीठी बात।।

-'शिव सदन' मुरार नगर, औद्योगिक क्षेत्र, सण्डीला, हरदोई (उ.प्र.)

राजस्थान-समाचार

महात्मा आनन्द स्वामी का जन्मोत्सव

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा एवं आर्य युवा समाज, राजस्थान के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 'आनन्द पर्व' जो कि महात्मा आनन्द स्वामी के जन्मोत्सव के रूप में १६ व १७ अक्टूबर को डीएवी पब्लिक स्कूल, कोटा में मनाया गया। इस अवसर पर १७ अक्टूबर को १५१ कुण्डीय यज्ञ का आयोजन किया गया। इससे एक दिन पूर्व १६ अक्टूबर को डा.वागीश कुमार शर्मा जी के 'आओ चलें सेवा से आनन्द की ओर' विषय पर प्रवचन हुये जिसमें बड़ी संख्या में आर्य समाजी व शहर के गणमान्य अतिथि उपस्थित थे। इस अवसर पर प्रतिभाशाली विद्यार्थियों तथा शहर के सेवाभावी आर्यसमाजियों को अंगवस्त्र पहना कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ पाणिनी महाविद्यालय वाराणसी से पधारी विदुषी डा. प्रीति विमर्शनी एवं महाविद्यालय की ब्रह्मचारिणियों के ब्रह्मत्व में सम्पन्न यज्ञ से हुआ। इस भव्य और श्रेष्ठ आयोजन के मुख्य अतिथि थे श्री पूनम सूरी प्रधान आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डीएवी कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति नई दिल्ली तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता साध्वी उतमा यति ने की।

इस अवसर पर आर्य समाज जिला सभा कोटा के प्रधान श्री अर्जुनदेव चड्ढा के नेतृत्व में श्री अरविन्द पाण्डेय, श्रीचन्द गुप्ता, नरदेव आर्य, रामप्रसाद याज्ञिक, चन्द्रमोहन कुशवाहा एवं अन्य आर्य समाज पदाधिकारियों ने भी राजस्थानी चूनड़ी का साफा, मोतियों की माला, दुशाला व ओम का सुसज्जित स्मृति चिन्ह भेंट कर प्रधान श्री पूनम सूरी जी का सम्मान किया। *(सरिता रंजन गौतम)*

गरबा उत्सव में वेद प्रचार

कोटा, २२ अक्टूबर। गुजराती समाज सभा भवन कोटा में नवरात्री के अवसर पर गरबा उत्सव में आर्य समाज जिला सभा द्वारा गुजराती भाषा में वैदिक साहित्य का वितरण कर वेद प्रचार किया गा। वेद प्रचार का शुभारंभ आर्य समाज के जिला प्रधान श्री अर्जुनदेव चड्ढा, गुजराती समाज के पूर्व अध्यक्ष जी.डी.पटेल, अध्यक्ष नीलेषभाई पटेल ने मंत्रोच्चार के साथ दीप प्रज्ज्वलन से किया। अर्जुनदेव चड्ढा ने निलेष भाई पटेल को गुजराती भाषा में साहित्य का सेट प्रदान किया। श्री चड्ढा ने कहा कि अपनी मातृभाषा में लिखा साहित्य हम अपनत्व के साथ पढ़ते हैं। साहित्य हमारे जीवन को दिशा देता है। आर्य समाज का साहित्य जीवन जीने का मार्ग बतलाता है। गुजराती समाज के पूर्व प्रधान व समाज सेवी जी.डी. पटेल ने कहा कि महर्षि दयानन्द गुजरात ही नहीं, भारत के रत्न थे। महर्षि दयानन्द के साहित्य से विश्व में क्रांति आई जिससे भारत में समाज सुधार के कार्य का शुभाररंभ हुआ। इस अवसर पर जिला आर्य समाज के मंत्री कैलाश बाहेती, वेद प्रचार समिति के संस्थापक रामप्रसाद याज्ञिक, आर्य समाज गायत्री विहार के मंत्री उमेश कुर्मी सहित बड़ी संख्या में लोग उपस्थित थे। *(अरविन्द पाण्डे)*

अर्जुनदेव चड्ढा का भव्य स्वागत

कोटा, २० सितम्बर। आर्य समाज में जिला आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान अर्जुन देव चड्ढा ने वैदिक साहित्य केन्द्र का उद्घाटन किया। श्री चड्ढा के राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा जयपुर के उपप्रधान चुने जाने के पश्चात प्रथम बार रावतभाटा पधारने पर आर्य समाज रावतभाटा के द्वारा उनका भव्य स्वागत किया गया। आर्य समाज के प्रधान नरदेव आर्य ने श्री चड्ढा का माल्यार्पण, शॉल ओढ़ा कर एवं साफा पहनाकर स्वागत किया। शारदा साहित्यमंत्र के प्रतिनिधियों ने श्री चड्ढा का स्वागत किया। इस अवसर पर आर्य वीर दल रावतभाटा के द्वारा सूर्य नमस्कार, योगासन आदि का प्रदर्शन किया गया। आर्य वीर दल के सदस्यों ने वीर गीत गाकर आर्यत्व का परिचय दिया। राष्ट्रप्रेम का उदाहरण प्रस्तुत किया। इसका संचालन जोतसिंह कर रहे थे व उनक सहयोग योगेन्द्र सिंह व निर्भय सिंह कर रहे थे। कार्यक्रम का संचालन ओम प्रकाश आर्य ने किया। *(नरदेव आर्य)*

दिल्ली-समाचार

आर्यरत्न पद्मभूषण श्री बृजमोहन मुंजाल दिवंगत

प्रसिद्ध उद्योगपति श्री बृजमोहन लाल मुंजाल का १ नवम्बर २०१५ को ९२ वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से लोधी रोड मुक्तिधाम में किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा का आयोजन ४ नवम्बर २०१५ को इन्दिरा गांधी इण्डोर स्टेडियम मे किया गया, जिसमें श्री धर्मपाल आर्य, श्री शिव कुमार मदान, आर्यसन्देश के सह व्यवस्थापक श्री एस.पी.सिंह ने पहुंच कर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। समाज में न केवल एक सफलतम व्यवसायी के रूप में अपितु यज्ञप्रेमी के रूप में पहचाना जाना आपके परिवार के यज्ञ के प्रति प्रेम को दर्शाता था। लगभग ९२ वर्ष की आयु होने पर भी आप आर्य समाज के सत्संगों में सम्मिलित होने से अपने आपको रोक नहीं पाते थे, जो आपके हृदय में आर्य समाज के प्रति लगाव का ही प्रतीक था। सार्वदेशिक सभा के प्रधान आचार्य बलदेव जी, मन्त्री श्री प्रकाश आर्य, केन्द्रीय सभा के प्रधान एवं एम.डी.एच. के चेयरमैन महाशय धर्मपाल आर्य, महामंत्री राजीव आर्य ने शोक संवेदनाएँ व्यक्त कीं।

'आर्य लोक वार्ता' की श्रद्धांजलि!

सीतापुर-समाचार

साहित्य साधकों का सारस्वत सम्मान

०५.११.१५। हिन्दी साहित्य परिषद् एवं अन्नपूर्णा साहित्य संगम के संयुक्त तत्वावधान में छः साहित्य साधकों को सारस्वत सम्मान प्रदान किया गया। जिन साहित्य साधकों को सम्मानित किया गया उनमें कुंडलिया छंद मे विरचित 'भावातिरेक' काव्यकृति की रचयिता श्रीमती रमा आर्य 'रमा' लखनऊ का नाम प्रमुख है। इसके अतिरिक्त 'गीत वल्लरी' की रचयिता श्रीमती आभा मिश्रा हरदोई, 'लाली कहाँ है'- सवैया काव्य प्रणेता श्री महेश प्रसाद पाण्डेय 'महेश', 'मुस्कराती कलियां' गीत काव्य के प्रणेता अरविन्द रस्तोगी, कवि-समीक्षक श्री आनन्द रस्तोगी एवं वरिष्ठ प्रबंधक राजभाषा श्री सी.पी.सिंह, इलाहाबाद बैंक सीतापुर को भी सम्मानित किया गया। समारोह की अध्यक्षता श्री देव नारायण मिश्र ने की।

जिला पंचायत सभागार नेहरू भवन में आयोजित इस समारोह में श्री भूपेन्द्र दीक्षित के संचालन में सीतापुर के जाने माने कवियों के काव्यपाठ ने वातावरण को रसमय बना दिया। जिन कवियों ने काव्यपाठ किया उनमें 'लफ्जों का मुकाम' गीत संकलन के रचयिता श्री गोपाल सागर, महफूज रहमानी, रईस खैराबादी, वीरेन्द्र तिवारी, अमरेन्द्र सिंह, कु.विकास वाजपेई, माया प्रकाश, विनोदिनी रस्तोगी, आभा मिश्र, अरविन्द रस्तोगी, महेश पाण्डेय 'महेश' एवं श्रीमती रामा आर्य 'रमा' के नाम प्रमुख हैं। श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी' ने अपनी उपस्थिति से समारोह को गौरवान्वित किया।

डा.मधुप जयन्ती एवं काव्योत्सव

हिन्दी साहित्य परिषद् सीतापुर द्वारा शरद पूर्णिमा की सांध्यवेला में अवधी के विद्वान मनीषी 'साहित्य भूषण' उपाधि प्राप्त स्व.डॉ.श्यामसुन्दर मिश्र 'मधुप' का जन्मोत्सव मनाया गया। समारोह की अध्यक्षता श्री अवधेश शुक्ल 'अवधेश' ने की। इस अवसर पर श्रीमती विनोदिनी रस्तोगी, इं.गोपाल सागर, डॉ. के.एन.रस्तोगी, रामदास वैश्य, अजीज, अर्चन, महफूज रहमानी आदि कवियों ने काव्यपाठ द्वारा मधुप जयन्ती को सफलता प्रदान की। कार्यक्रम २ ब्रह्मपुरी परिषद कार्यालय में सम्पन्न हुआ।

धनवन्तरि जयन्ती

वैद्यनाथ प्रतिष्ठान, राम किशुनदास अग्रवाल फर्म जेल रोड सीतापुर पर भगवान धनवन्तरि समारोह धूमधाम से वैद्य आचार्य नरेन्द्र प्रसाद शर्मा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। स्वागत समारोह में पूजन के बाद कमल कुमार अग्रवाल ने कहा कि यह फर्म सदैव आयुर्वेद औषधियों विशेष रूप से बैद्यनाथ औषधियों के लिए विख्यात है। पंडित राम जी मिश्र ज्योतिषाचार्य ने पूजन सम्पन्न कराते हुए आशीर्वाद दिया। संचालन वैद्य अवधेश शुक्ल ने किया। और आयुर्वेद की महत्ता पर विचार प्रस्तुत किये। इस अवसर पर प्रदीप कुमार मिश्र ने विशेष औषधियों पर विचार दिये। भावनात्मक रचनात्मक औषधियों के गुणों व आयुर्वेद पद्धति पर चर्चा करने में प्रेम शंकर, कवि दिनेश मिश्र राही, कृष्णकान्त दीक्षित, पुनीत अग्रवाल, आलोक, वैद्य प्रदीप अग्रवाल, रमाशंकर शर्मा, बड़कन्नू पांडे, राजीव, सुदीप अग्रवाल आदि मौजूद थे। संगोष्ठी के अन्त में भालेन्द्र दत्त त्रिपाठी एवं ओम प्रकाश शर्मा के आकस्मिक निधन पर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए दो मिनट का मौन रखा गया।

सम्पादक की डायरी

❐दि.१२.१०.१५ : १९/८३८, रिंग रोड, इन्दिरा नगर, लखनऊ में श्रीमती निमिषा वाजपेयी, सुपुत्री आलोक वीर आर्य के जन्म दिवस पर यज्ञ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर समस्त पारिवारिक जनों ने यज्ञ में भाग लिया तथा निमिषा को बधाइयाँ एवं शुभकामनाएँ अर्पित कीं। कु.वेदांजलि वाजपेयी तथा चि.वेदांश शंकर को आशीर्वाद प्रदान किया गया।

❐दि.१२.१०.१५ : सूर्योदय कालोनी, राणाप्रताप मार्ग, लखनऊ- डॉ.रजत बत्रा एवं श्रीमती मधु बत्रा के संयोजन में वैदिक यज्ञ का आयोजन किया गया तथा स्व.मनमोहन बत्रा, अधिष्ठाता ऐशबाग पेट्रोल पम्प, लखनऊ को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। बत्रा परिवार के अनेक सदस्य इस अवसर पर मौजूद थे।

❐दि.२२.१०.१५ : विजयादशमी के पावन पर्व पर प्रख्यात लेखिका वेद विदुषी डॉ.शान्तिदेव बाला के महानगर स्थित आवास पर वैदिक यज्ञ डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने सम्पन्न कराया। विजयादशमी पर्व के महत्व पर प्रकाश डाला गया तथा डॉ.शान्तिदेव बाला के सुंदर स्वास्थ्य एवं दीर्घायुष्म की कामना की गई। इस अवसर पर डॉ.शान्तिदेव बाला के सुपौत्र प्रिंस सहित सुपुत्र ब्रिगेडियर अमिताभ, श्रीमती अमिताभ इत्यादि पारिवारिक जन उपस्थित थे।

❐दि.२५.१०.१५ : नगर आर्य समाज, रकाबगंज लखनऊ में उपप्रधान श्री इकबाल शंकर श्रीवास्तव ने कृतज्ञता ज्ञापन दिवस मनाया। पिछले दिनों आर्य समाज द्वारा अपने को सम्मानित किये जाने के उपलक्ष्य में सभी को फलाहार कराया। विशेष अतिथि के रूप में डॉ.वेद प्रकाश आर्य प्रधान सम्पादक आर्य लोक वार्ता ने इकबाल शंकर जी के उत्तम मानवीय गुणों की सराहना की और कृतज्ञता ज्ञापन हेतु उन्हें धन्यवाद दिया।

❐दि.२७.१०.१५ : पतंजलि योग समिति, लखनऊ के साहित्य प्रभारी श्री मदन गोपाल सिंहल ने अपने आवास ६०३, ओमैक्स अपार्टमेंट, विभूति खण्ड, गोमती नगर, टावर नं.६ में वैदिक यज्ञ का आयोजन करके अपनी दिवंगता जीवन सहचरी श्रीमती लोकेश सिंहल का स्मृति दिवस मनाया। श्रीमती लोकेश के श्रेष्ठ जीवनादर्शों पर प्रकाश डाला गया। श्री एवं श्रीमती विकास तथा श्री एवं श्रीमती अमित तथा समस्त पारिवारिक जनों के साथ श्री पीयूषकान्त, अध्यक्ष पतंजलि योग समिति (पूर्व), गोपालकृष्ण श्रीवास्तव, जवाहरलाल शाह, अलोपी शंकर की विशिष्ट उपस्थिति ने आयोजन की गरिमा बढ़ा दी। श्री पीयूष कान्त ने महर्षि दयानन्द के जीवन तथा आर्य समाज के दस नियमों के महत्व पर प्रकाश डाला।

❐दि.०८.११.१५ : मिश्रिख (सीतापुर) के सुविख्यात आर्य श्रेष्ठी श्री बाँकेलाल आर्य सर्राफ के सुपुत्र श्री हरिश्याम रस्तोगी के नवनिर्मित गृह में प्रवेश संस्कार यज्ञ डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने सम्पन्न कराया। इस अवसर पर श्री हरिश्याम रस्तोगी, श्रीमती रजनी रस्तोगी के अतिरिक्त पुत्र महेन्द्र, जितेन्द्र, लकी, शुभम, पुत्री-प्रीति, सोनाली इत्यादि समस्त आर्य रस्तोगी परिवार ने यज्ञ में भाग लिया। सभी के अभिभावक वयोवृद्ध श्री बाँकेलाल आर्य ने मिश्रिख से पधार कर देखा और सराहा। महर्षि मिशन अस्पताल के अधीक्षक डॉ.एस.के.रस्तोगी (सुपुत्र श्री बाँके लाल आर्य) की उपस्थिति ने आयोजन को चिरस्मरणीय बना दिया।

❐दि.१०.११.१५ : बी १/१३, सेक्टर-जे, अलीगंज, लखनऊ में स्व.सुभाष चन्द्र सक्सेना (जीवन बीमा अधिकारी) की प्रथम पुण्यतिथि पर यज्ञ का आयोजन किया गया। स्व.सक्सेना जी के पुत्र श्री राजेश सक्सेना एडवोकेट, पुत्रवधू श्रीमती शशि, पुत्री मधु, पूनम एवं श्रीमती शोभारानी (पत्नी स्व.सुभाष जी), श्री शरद सक्सेना इत्यादि अनेक पारिवारिक जनों ने यज्ञ में आहुतियाँ दीं तथा दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की।

❐दि.१०.११.१५ : १९/८३८, रिंग रोड, इन्दिरा नगर में स्व.देवदत्त त्रिपाठी आयुर्वेदाचार्य की जयन्ती पर वैदिक यज्ञ सम्पन्न हुआ। डॉ.वेद प्रकाश आर्य, श्रीमती सरला आर्य, आलोक वीर, श्रीमती शशि, अमित वीर, श्रीमती रश्मि, मलयज त्रिपाठी एवं कु.अनूषा त्रिपाठी ने यज्ञ में भाग लिया तथा पूज्य वैद्य जी को श्रद्धांजलि अर्पित की।

लखनऊ-समाचार

गोमती काव्य ग्रन्थ का विमोचन

०८.११.२०१५। लोक भारती के संयोजकत्व में लखनऊ विश्वविद्यालय के मालवीय सभागार में आयोजित पर्यावरण एवं गोमती मित्र मण्डल राष्ट्रीय संगोठी एवं सम्मेलन में उ.प्र.के राज्यपाल माननीय श्री राम नाइक जी ने वरिष्ठ कवि दयानन्द जड़िया 'अबोध' की पुस्तक 'गोमती' (काव्यग्रंथ) व लोक भारती की मासिक पत्रिका लोक सम्मान के 'युवा शक्ति विशेषांक' का संयुक्त रूप से लोकार्पण किया। इस अवसर पर मंच पर उपस्थित अन्य गण्यमान महानुभावों में प्रमुख थे लखनऊ के महापौर प्रो.डा. दिनेश शर्मा, मनकामेश्वर मनिदर की महन्त सुश्री दिव्यागिरि, पूर्व सांसद (राज्यसभा) डा.रामनारायण साहू, लखनऊ विश्व विद्यालय लखनऊ के कुलपति तथा डा. ए.पी.जे.अब्दुल कलाम टेक्निकल यूनिवर्सिटी के वी.सी.प्रो.विनय पाठक आदि। सभागार श्रोताओं दर्शकों से खचाखच भरा हुआ था। *('अबोध')*

सण्डीला-समाचार

आर्य समाज सण्डीला का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज सण्डीला जिला हरदोई का वार्षिक उत्सव १५ से १७ नवम्बर को समारोह पूर्वक आयोजित हुआ। उत्सव में प्रातःकाल यज्ञ, भजन, प्रवचन तथा सायंकाल संध्योपासना, भजनोपदेश तथा व्याख्यान होते रहे। इस अवसर पर आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी, वेदोपदेशक आचार्य पुष्पमित्र शास्त्री तथा श्री कुलदीप आर्य भजनोपदेशक के विचारों एवं भजनों को दूर दूर तक जनता ने बड़े ध्यान पूर्वक सुना और सराहा।

लखनऊ-समाचार

वेदमन्दिर, आर्य समाज राजाजीपुरम
वार्षिकोत्सव, वानप्रस्थ दीक्षा एवं श्राद्धदिवस

(श्री निरंजन सिंह की विशेष रिपोर्ट)

आर्य समाज राजाजीपुरम का वेद प्रचार कार्यक्रम १२ से १५ अक्टूबर २०१५ तक आयोजित किया गया। प्रतिदिन प्रातःवेला में ५ बजे वेदमन्दिर से विभिन्न दिशाओं में प्रभात फेरी निकाली गई, जिसमें आर्य समाज के सदस्यों के अतिरिक्त बड़ी संख्या में बाहर के व्यक्ति भी सम्मिलित हुए तथा स्थान-स्थान पर अनेक महानुभावों ने पुष्पवर्षा व जलपान से प्रभातफेरी का स्वागत किया। सायंवेला में ५ बजे से ८ बजे तक के कार्यक्रम में देवयज्ञ, ब्रह्मयज्ञ, भजन व वेदोपदेश हुए। वेदोपदेश आचार्य विश्वव्रत शास्त्री, आचार्य सन्तोष वेदालंकार व पं.अखिलेश लखनवी द्वारा किये गये।

इसी क्रम में समाज का त्रिदिवसीय वार्षिकोत्सव १६ से १८ अक्टूबर तक बड़े ही हर्षोल्लास सहित सम्पन्न हुआ। १६ अक्टूबर का कार्यक्रम प्रातः ७.३०बजे ब्रह्म से आरम्भ हुआ। देवयज्ञ के पश्चात् पं.नेमप्रकाश धनुर्धर के भजनोपदेश तथा आर्य जगत् के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, संचालक गुरुकुल पूंठ(गढ़) व मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र.के प्रवचन सुनने का सभी को सुअवसर मिला। यजमान श्री काशी प्रसाद शास्त्री बने। कार्यक्रम ११.१५बजे तक चला। सायंवेला में ५.३० से ८.३०बजे के कार्यक्रम में ब्रह्मयज्ञ के पश्चात् पुनः उक्त दोनों विद्वान् भजनोपदेशक व आर्य संन्यासी स्वामी जी के भजनोपदेश तथा प्रवचन सुनने को मिले।

१७ अक्टूबर शनिवार के कार्यक्रम में प्रातः ७.३० से ब्रह्मयज्ञ के पश्चात् देवयज्ञ स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती व सुश्री प्रतिज्ञा आचार्या के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। इस बड़े ही सुरम्य व मनमोहक वातावरण में समाज के प्रधान व आज के यजमान डा.आनन्द बरनवाल ने श्रद्धेय स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती से वानप्रस्थ की दीक्षा ग्रहण की। इसके साथ ही स्वामी जी के आह्वान पर आर्य समाज राजाजीपुरम की उपमंत्री श्रीमती स्नेहलता मेहता एवं सहायक कोषाध्यक्ष श्रीमती शारदा अरोड़ा सहित डॉ.आनन्द बरनवाल जी की बहन श्रीमती कमलेश गोयल (मुरादाबाद) व डालीगंज आर्यसमाज के प्रधान श्री प्रेमशंकर शुक्ल ने भी वानप्रस्थ की दीक्षा ग्रहण की। जलपान के पश्चात् पं.'धनुर्धर' जी के भजनोपदेश ने सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। इसके बाद डॉ.आनन्द बरनवाल ने स्वामी धर्मेश्वरानन्द का सम्मान समाज की ओर से शॉल आदि भेंट कर किया। इसके अनन्तर स्वामी जी व डॉ.वागीश आचार्य, प्रधानाचार्य आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय एटा के प्रवचनों को श्रवण कर सभी तृप्त हुए। सायंवेला में भी ५.३०से ८.३०बजे तक के कार्यक्रम में ब्रह्मयज्ञ, भजनोपदेश व डा.वागीश आचार्य के प्रवचन हुए।

१८ अक्टूबर रविवार को वार्षिकोत्सव के समापन दिवस पर ब्रह्मयज्ञ के पश्चात् देवयज्ञ हुआ। मुख्य यज्ञवेदी के अतिरिक्त दो और हवनकुण्डों की व्यवस्था की गई। मुख्य यजमानी श्री हरीचन्द्र बतरा का परिवार पूर्व से ही नियत था। पं.नेमप्रकाश धनुर्धर के भजनोपदेश के पश्चात् इस समापन समारोह का मुख्य आकर्षण श्राद्ध सम्मान कार्यक्रम आरम्भ हुआ, जिसमें आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान डा.वागीश आचार्य, मुख्य अतिथि श्री देवेन्द्रपाल वर्मा, प्रधान आर्यप्रतिनिधि सभा उ.प्र., पं. नेमप्रकाश आर्य, वरिष्ठ सभासद श्री भगवानलाल बतरा सपत्नीक व यज्ञ की ब्रह्मा सुश्री प्रतिज्ञा आचार्या का श्राद्ध-सम्मान शाल, द्रव्य आदि भेंट कर किया गया। इसके साथ ही नगर के सभी उपस्थित विद्वान्, उपदेशक, आर्य लोक वार्ता के प्रधान सम्पादक डॉ.वेद प्रकाश आर्य सहित अन्य अतिथियों का भी अंगवस्त्र आदि भेंट कर उचित सम्मान किया गया। व्यक्तिगत रूप से भी कई सज्जनों ने अपने अपने पितरों का श्राद्ध किया। फिर वेद प्रचार कार्यक्रम व वार्षिकोत्सव में बने सभी यजमानों, ८० या ८०वर्ष से अधिक वय प्राप्त सभी वरिष्ठ, सभासद, योग व प्राणायाम प्रशिक्षक श्री रमाकान्त सिंह, होम्यो चिकित्सा में आरम्भ से ही सहयोगी श्री भगवान लाल बतरा सहित समाज के बच्चों को भी स्मृति चिन्ह व पुस्तकें भेंट की गईं। अन्त में डा.वागीश आचार्य के प्रवचन व मुख्य अतिथि श्री देवेन्द्र पाल वर्मा के उद्बोधन के पश्चात् प्रधान जी के धन्यवाद प्रकाश व शान्तिपाठ के पश्चात् इस सत्र का समापन हुआ तथा १२.३५बजे से सभी ऋषिभोज में सम्मिलित हुए।

पुनः सायंवेला में ५ से ८ बजे के कार्यक्रम में ब्रह्मयज्ञ, भजनोपदेश व डा.वागीश आचार्य के शंका समाधान के पश्चात् भजनोपदेशक पं.नेमप्रकाश धनुर्धर के धनुर्विद्या प्रदर्शन, जिसमें नेत्रों पर पट्टी बांधकर लक्ष्यभेदन सहित अन्य प्रदर्शनों ने सभी का मन मोह लिया।

आर्य समाज इन्दिरा नगर का वार्षिकोत्सव

आर्य उपप्रतिनिधि सभा के प्रधान तथा आर्य समाज इंदिरा नगर के मंत्री श्री रमेश चन्द्र त्रिपाठी की सुविचारित योजनानुसार आर्य समाज इन्दिरा नगर का ३७वां वार्षिक उत्सव अष्टांग योग शिविर के रूप में मनाया गया, जिसमें समाधिमान स्वामी अमृतानन्द, इटारसी (मध्य प्रदेश) ने योग की समस्त क्रियाओं का प्रशिक्षण प्रदान किया। साथ ही आर्य समाज इन्दिरा नगर के सदस्यों ने बारी बारी से वेदोपदेश एवं भजनोपदेशक की भूमिका का निर्वाह किया। श्री रमेशचन्द्र त्रिपाठी, रामेन्द्रदेव वर्मा, नवनीत निगम, डोरीलाल राजपूत, नरसिंह पाल, श्रीमती कान्ति कुमार ने क्रमशः यमनियम, त्रैतवाद, योग सम्बन्धी क्रियाओं का व्यावहारिक अभ्यास, आसन प्राणायाम, त्रिगुणात्मक प्रवृत्ति, संप्रज्ञात असंप्रज्ञात समाधि, अक्षय सुख की प्राप्ति इत्यादि विषयों पर प्रकाश डाला। प्रीतिभोज के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। समस्त आयोजन श्री रामेन्द्रदेव वर्मा, प्रधान आर्य समाज इंदिरा नगर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुए।

आर्य समाज चन्द्रनगर का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज चन्द्र नगर का ५८वां वार्षिकोत्सव ८ से ११ नवम्बर तक समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् आचार्य विकास तिवारी वेदोपदेशक तथा पं.दिनेश दत्त आर्य भजनोपदेशक, दिल्ली का शुभागमन हुआ। आचार्य वेदव्रत अवस्थी के संरक्षण में पं.अखिलेश कुमार लखनवी ने इस अवधि में नित्य प्रति प्रातः राष्ट्रकल्याण यज्ञ सम्पन्न कराया तथा परम्परानुसार ऋषि निर्वाण एवं दीपावली पर्व तथा आर्य उपप्रतिनिधि सभा, लखनऊ का मासिक अधिवेशन श्री रमेशचन्द्र त्रिपाठी प्रधान एवं श्री प्रबोध सागर जौहरी मंत्री के सान्निध्य में आयोजित हुआ।

समापन दिवस ११ नवम्बर को ऋषि लंगर (प्रीतिभोज) की व्यवस्था की गई तथा इससे पूर्व विद्वानों को सम्मानित किया गया। आचार्य रूपचन्द्र दीपक, रमेश चन्द्र त्रिपाठी, डॉ.वेद प्रकाश आर्य, वेदव्रत अवस्थी, आचार्य सन्तोष कुमार वेदालंकार ने अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन श्री रणसिंह, प्रधान आर्य समाज ने किया तथा पूर्व प्रधान-संरक्षक श्री जगदीश खत्री ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति से समारोह को सफलता प्रदान की।

आर्य समाज मानसरोवर का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज मानसरोवर लखनऊ द्वारा १ नवम्बर २०१५ को वार्षिकोत्सव का आयोजन किया गया। देवयज्ञ श्री संतोष वेदालंकार जी द्वारा सम्पन्न कराया गया। आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान डा.शिवदत्त पाण्डेय, श्री वेदव्रत अवस्थी, श्री प्रताप कुमार साधक, पं.सन्तोष वेदालंकार एवं अखिलेश लखनवी के प्रवचन हुए। श्री रमेश चन्द्र आर्य ने अपने भजनों से सबका मन मोह लिया गया। इस कार्यक्रम में बच्चों द्वारा मंत्रों का भावार्थ सहित उच्चरण करके उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया गया, जिसके लिए उन्हें पारितोषिक प्रदान किया गया।

इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र.के डा.भानुप्रताप जी की गरिमामयी उपस्थिति पूरे समय रही तथा उपप्रतिनिधि सभा, लखनऊ के पदाधिकारियों एवं अन्य आर्यसमाजों के सदस्यों द्वारा उपस्थित होकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई गई। कार्यक्रम का संचालन डा.आनन्द प्रकाश सक्सेना, मंत्री द्वारा किया गया। उपस्थित लोगों को प्रधान श्री प्रबोध सागर जौहरी ने धन्यवाद दिया। ऋषिलंगर के साथ यह कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। *(प्रबोध सागर जौहरी, प्रधान)*

साहित्यिक प्रतियोगिताएँ

भारतीय भाषा प्रतिष्ठापन राष्ट्रीय परिषद शाखा उ.प्र.लखनऊ हिन्दी विद्वानों से 'भारतीय भाषाओं में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी लेखन' विषय पर व हिन्दी में कम्प्यूटर पर कार्य करने वाले जन सामान्य विद्वानों से 'हिन्दी में कम्प्यूटर कार्य स्थिति एवं समाधान' विषय पर हिन्दी शोध लेख एवं कक्षा ८ से १२ तक के विद्यार्थियों से 'राष्ट्रप्रेम बढ़ाने में भाषा का योगदान' विषय पर हिन्दी निबंध आमंत्रित करती है। हिन्दी शोध लेख एवं निबंध १५०० शब्दों के अन्तर्गत हो तथा शोध लेख में १०० शब्दों का सारांश प्रारम्भ में दिया जाना आवश्यक है। विद्यार्थी अपना नाम, पिता का नाम, कक्षा व सेक्शन, विद्यालय का नाम, पता अपना दूरभाष/चलभाष संख्या देते हुए अपने प्रधानाचार्य के माध्यम से निबन्ध अग्रेसित कराकर एवं विद्वतजन अपने शोध लेख में नाम, पता व चलभाष अंकित करते हुए शोध लेख ३१ दिसम्बर तक मेरे पते पर प्रेषित करें। श्रेष्ठ विद्वान लेखकों एवं विद्यार्थियों को परिषद द्वारा पुरस्कृत एवं सम्मानित किया जायेगा।

-महेशचन्द्र द्विवेदी, अध्यक्ष, भारतीय भाषा प्रतिष्ठापन परिषद,
ए-७६६, इन्दिरा नगर, लखनऊ-२२६ ०१६।

प्रातःस्मरणीय

महामानव स्व.देवदत्त त्रिपाठी वैद्य की जयन्ती

सादर नमन

जन्म
1896

निधन
1983

शास्त्र आयुर्वेद के, आचार्य थे विद्वान् थे तुम;
वेद विद्या के महा, पंडित प्रखर पवमान थे तुम;
धर्म के दस लक्षणों के, मूर्तिमय प्रतिमान थे तुम;
देवदत्त सुनाम गोनी, ग्राम गर्व गुमान थे तुम।।
वर्ष त्रयविंशति व्यतीते, खोजता अब तक चमन है;
पितृवर; इस सुत निराश्रित का तुम्हें सौ सौ नमन है!!

(रचयिता : डॉ.वेद प्रकाश आर्य)

सौजन्य से- कमला, विमला, रमा (पुत्रियाँ), ज्ञानेन्द्र दत्त, वेद प्रकाश (पुत्र)

आर्य लोक वार्ता सम्मान समारोह-15 स्थगित

'आर्य लोक वार्ता' के हितैषियों, पाठकों एवं सहयोगियों को सूचित किया जाता है कि 'आर्य लोक वार्ता सम्मान समारोह-२०१५' जो दि. १२ दिसम्बर २०१५ को राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह, कैसरबाग, लखनऊ मे आयोजित होने वाला था, अब यह समारोह २०१६ के प्रारंभ में शिवरात्रि पर्व के तुरन्त बाद आयोजित किया जायगा।

हमारे कई सहयोगियों को १२ दिसम्बर की तिथि अनुकूल नहीं थी। कई लोग वैवाहिक आयोजनों में व्यस्त थे और कई लोग दिसम्बर की शीत तथा वर्षा से भी आशंकित थे, हमारे कई पारिवारिक सदस्य चिकित्सकीय सेवाओं में संलग्न हैं। उन्हें इस तिथि-परिवर्तन से अवश्य ही राहत महसूस होगी।

तथापि अनेक लोगों को इस स्थगन से असुविधा का भी अनुभव होगा। असुविधा हेतु मैं क्षमा प्रार्थी हूँ और विश्वास करता हूँ कि निकट भविष्य में आयोजित होने वाले समारोह में आपका पूर्ण सहयोग हमें सुलभ होगा।

-डॉ.वेद प्रकाश आर्य

संस्थापक
स्व. स्वामी आत्मबोध सरस्वती

प्रधान संपादक
डॉ० वेद प्रकाश आर्य
कार्यालय-19/838, प्रथम तल, रिंगरोड, इन्दिरानगर, लखनऊ-226016
9450500138

संपादक (अवैतनिक)
आलोक वीर आर्य
8400038484

प्रसार व्यवस्थापक
अमित वीर त्रिपाठी
9795445800

संवाद प्रमुख
गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
9956087585

कार्यालय प्रमुख
श्रीमती सरला आर्य
9450500138

E-mail-
aryalokvarta@gmail.com

सहयोग राशि

सामान्य सदस्य	–	100 रु. वार्षिक
व्रती सदस्य	–	250 रु. वार्षिक
ऋत्विक् सदस्य	–	1,200 रु. वार्षिक
होता सदस्य	–	2,500 रु. वार्षिक
संरक्षक	–	12,000 रु.
प्रतिष्ठापक	–	50,000 रु.

सहयोग राशि निम्न बैंकों की किसी भी शाखा में 'आर्य लोक वार्ता' खाते में जमा कर हमें सूचित कर सकते हैं। विवरण इस प्रकार है-

(1) बैंक-बैंक आफ बड़ौदा, विभव खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ।
IFSC-BARBOVIBHAV
खाता धारक – आर्य लोक वार्ता
खाता सं. – 46900 1000 00651
खाते का प्रकार-बचत खाता

(2) बैंक-इलाहाबाद बैंक, ए-869, इन्दिरा नगर, लखनऊ।
IFSC-ALLAO211122
खाता धारक – आर्य लोक वार्ता
खाता सं. – 5022 3541 717
खाते का प्रकार-बचत खाता

प्रतिष्ठापक
श्री आनन्द कुमार आर्य, कोलकाता
श्री अरविन्द कुमार आर्कीटेक्ट, लखनऊ
श्री जे.पी.अग्रवाल, कनखल, हरिद्वार
डॉ रजत बत्रा, लखनऊ

संरक्षक
श्री अर्जुनदेव चड्ढा, कोटा, राजस्थान
श्रीमती प्रमोद कुमारी, लखनऊ
श्रीमती शालिनी कुमार, लखनऊ
श्री कौशल किशोर श्रीवास्तव, लखनऊ
श्री जगदीश लाल खत्री, लखनऊ
श्रीमती कुसुम वर्मा, लखनऊ
डॉ. रूपचन्द्र 'दीपक', लखनऊ
श्रीमती बलबीर कपूर, लखनऊ

परामर्श एवं सहयोग
श्री रघुनाथ सिंह आर्य, कानपुर
श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी', सीतापुर
डा. सत्य प्रकाश, सण्डीला, हरदोई
श्री अखिल मित्र शास्त्री, लखनऊ

सलाहकार
श्री आनन्द चौधरी एडवोकेट, लखनऊ

मुद्रक, स्वामी और प्रकाशक डॉ. वेद प्रकाश आर्य के लिए क्रियेटिव ग्राफिक्स, बी-२, हिमांशु सदन, ५-पार्क रोड, लखनऊ द्वारा मुद्रित तथा 'वेदाधिष्ठान' ५३८क/२३४ हरीनगर, (रवीन्द्रपल्ली) पो.-इन्दिरानगर, लखनऊ से प्रकाशित।

आर्य्य लोक वार्ता : पत्र नहीं स्वाध्याय है - एक नया अध्याय है।